OUR PUBLICATIONS

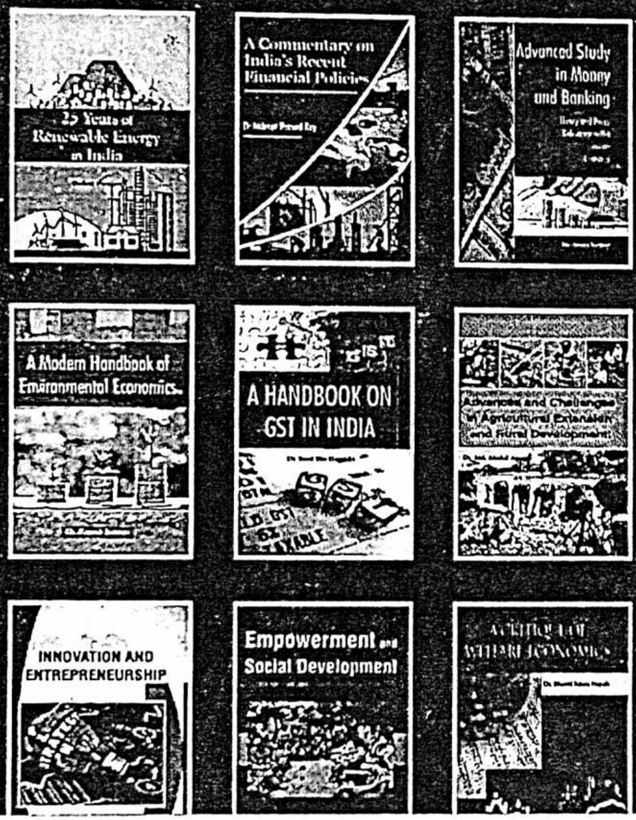

ISSN 0975-119X
UGC-CARE GROUP I LISTED
वर्ष 12 अंक 3 मई–जून 2020

दृष्टिकोण

कला, मानविकी एवं वाणिज्य की
मानक शोध पत्रिका

दृष्टिकोण

कला, मानविकी एवं वाणिज्य की मानक शोध पत्रिका

संपादक

डॉ. अश्विनी महाजन

एसोसिएट प्रोफेसर, डी.ए.वी. पी.जी. कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय

दृष्टिकोण प्रकाशन

वर्ष : 12 अंक : 3 □ मई-जून, 2020

दृष्टिकोण

संपादक मंडल

डॉ. अरुण अग्रवाल
ट्रेन्ट विश्वविद्यालय, पीटरबोरोग, ओन्टारियो

डॉ. दया शंकर तिवारी
राजधानी कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय .

डॉ. आनंद प्रकाश तिवारी
काशी विद्यापीठ विश्वविद्यालय, वाराणसी

डॉ. प्रकाश सिन्हा
इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद

डॉ. दीपक त्यागी
दीन दयाल उपाध्याय विश्वविद्यालय, गोरखपुर

डॉ. अरुण कुमार
रांची विश्वविद्यालय, रांची

डॉ. महेश कुमार सिंह
सिद्धू कान्हू विश्वविद्यालय, दुमका

डॉ. पूनम सिंह
बी.आर.ए. बिहार विश्वविद्यालय, मुजफ्फरपुर

डॉ. एस. के. सिंह
पटना विश्वविद्यालय, पटना

डॉ. अनिल कुमार सिंह
जे.पी. विश्वविद्यालय, छपरा

डॉ. मिथिलेश्वर
वीर कुंअर सिंह विश्वविद्यालय, आरा

डॉ. अमर कान्त सिंह
सिद्धू कान्हू विश्वविद्यालय, भागलपुर

डॉ. ऋतेश भारद्वाज
दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

डॉ. स्वदेश सिंह
दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

संपादकीय सम्पर्क:

448, पॉकेट-5, मयूर विहार, फेज-I, दिल्ली-110091

फोन : 011-22753916

e-mail : editorialindia@gmail.com; delhijournals@gmail.com

©Editorial India

Editorial India is a content development unit of Permanence Education Services (P) Ltd.

मूल्य: ₹ 2500.00

नोट: पत्रिका में प्रकाशित लेखकों के विचार अपने हैं। उसके लिए पत्रिका/संपादक/संपादक मंडल को उत्तरदायी नहीं ठहराया जा सकता। पत्रिका से सम्बंधित किसी भी विवाद के निपटारे के लिए न्याय क्षेत्र दिल्ली होगा।

इस अंक में

बेगूसराय जिला की बुंद्ध प्रतिमायें–*स्तुति कुमारी* 1

मौर्योत्तर काल: भारतीय कला एवं स्थापत्य कला के सांस्कृतिक विकास का काल रहा (200 ई० पू० से 200 ई० तक)–*सुरजीत कुमार सिंह* 3

निगमित अभिशासन: एक समग्र अवलोकन–*डॉ. अमरनाथ पासवान; मनीष चन्द्रा* 7

भारत में ग्रामीण महिलाओं पर वैश्वीकरण का प्रभाव–*डॉ० जय प्रकाश यादव; डॉ० आलोक कुमार कश्यप* 13

भारत में पर्यावरणीय प्रदूषण और महात्मा गाँधी की भूमिका का अध्ययन–*डॉ० कंचन; डॉ० सतीश चन्द्र जैसल* 17

वैश्वीकरण के सकारात्मक एवं नकारात्मक प्रभाव का एक समाज शास्त्रीय विश्लेषण –*डॉ० आलोक कुमार कश्यप; डॉ० जय प्रकाश यादव* 20

गरीबी एवं जनसंख्या: एक समाजशास्त्रीय अध्ययन–*डॉ० सतीश चन्द्र जैसल; डॉ० कंचन* 24

भारतीय राजनीति में राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की भूमिका: सत्याग्रह के संदर्भ में–*डॉ० अमिय कुमार* 27

परंपरा का प्रभाव और हिन्दी आलोचना–*मनीष तोमर* 30

वर्तमान परिपेक्ष्य में भारतीय लोक सेवक: समस्याएँ एवं सुधार की आवश्यकता–*डॉ० मो० रेयाज़ अहमद* 33

नवउदारवाद की आक्रामकता और दलित साहित्य की चिन्ताएँ–*शीतांशु* 41

कोणार्क नाटक में युगीन चेतना–*डॉ० शिवकुमार सी.एस. हड़पद* 46

गाँधी और अंबेडकर के जाति विषयक विचारों का तुलनात्मक अध्ययन–*माला मेश्राम* 50

असमीया विवाहगीतों के विविध पक्ष–*पूजा बरुवा* 56

डॉ. भूपेन हाजरिका के गीतों में अभिव्यक्त सामाजिक चेतना–*डॉ० प्रीति बैश्य* 62

नरेन्द्र कोहली के उपन्यासों में नारी संघर्ष–*सुरेश कुमार* 69

नागार्जुन और भूपेन हाजरिका की काव्य-संवेदना: एक अवलोकन–*डॉ० रीतामणि वैश्य* 72

नवीन लोक प्रशासन में समसामयिक विकास का एक अध्ययन–*सौरभ सुमन; माला मेश्राम* 80

प्राचीन भारत में पांचाल गणराज्य की महत्ता का ऐतिहासिक विश्लेषण–*प्रज्ञा शिखा* 85

भारत छोड़ो आंदोलन में भागलपुर की भूमिका: एक अध्ययन–*डॉ० संजय कुमार सहनी* 90

इतिहास क्या है: एक सुक्ष्म अध्ययन?–*डॉ० चन्दन कुमार* 95

महात्मा गांधी का स्वच्छता अभियान–*सुनीता कुमारी* 100

भारत और ईजराइल संबंध स्वतंत्रता से अब तक–*अजय कुमार* 104

एक राष्ट्र, एक चुनाव–*ऋतेश भारद्वाज* 108

भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन पर प्रथम विश्व युद्ध का प्रभाव–*डॉ० सुरेन्द्र कुमार सिंह* 116

राँची जिला के जनजातियों में सामाजिक-आर्थिक विकास का स्तर–*भुवनेश्वर कुमार मंडल* 120

राजस्थान के मानव संसाधन विकास का हनुमानगढ़ एवं श्रीगंगानगर जिलों की सामाजिक-आर्थिक स्थिति पर प्रभावों का विश्लेषणात्मक विवेचन–*अनिल कुमार; डॉ. कैलाश चन्द नायमा* 128

भारत में विदेशी प्रत्यक्ष निवेश के क्षेत्रवार अन्तर्प्रवाह के आर्थिक प्रभावों का मात्रात्मक विश्लेषण–*परवेज अली; डॉ० कैलाश चन्द नायमा* 134

राजस्थान में ग्रामीण विद्यालय बालिका शिक्षा में ड्रापआउट का विश्लेषण–*डॉ. श्रवण राज* 143

आधुनिक भारत का इतिहास–कुमार विशाल 973

पहरिया जनजाति–मधुलिका कुमारी 978

साहित्यानुवाद के इतिहास की दृष्टि और प्रकृति–डॉ. स्वाती ठाकुर 980

अलका सरावगी के उपन्यासों में चित्रित मध्य वर्ग का सामाजिक संदर्भ : एक अध्ययन–डॉ. ललन कुमार 986

भारतीय गाँव और डॉ. अंबेडकर : एक भौगोलिक दृष्टावलोकन –धीरज कुमार शर्मा; सत्य प्रकाश; आनंद कुमार; जैकी कुमार 989

शिक्षा एवं रोजगार के प्रति मुस्लिम महिलाओं की मनोवृत्ति पर सामाजिक कारकों का प्रभाव–सबा फरहीन 995

पटना शहर के ट्रैफिक पुलिस की मनोवैज्ञानिक स्थिति पर वायु प्रदुषण का प्रभाव का एक अध्ययन –सुजीत कुमार दूबे; डॉ. वंदना कुमारी 999

बज्जिका संगीत में देवी-देवता–डॉ० श्रीनिवास सुधांशु 1004

हंसराजक : व्यक्तित्व ओ कृतित्व–कुमकुम कुमारी 1017

बिहार में जनजाति और सामाजिक परिवर्तन : एक अध्ययन–डॉ. प्रियंका कुमारी 1020

इन्टर स्तरीय के छात्र एवम् छात्रांओं का बुद्धि-लब्धि तथा सृजनात्मकता के आधार: एक अध्ययन–डॉ. अचर्ना सिंह 1024

तार सप्तक का कला पक्षीय अध्ययन–ध्रुव कुमार शुक्ल 1028

बिहार में क्रांतिकारी आंदोलन एवं स्थानीय नेतृत्व–डॉ. अंगुरी बेगम. 1033

वज्जिकांचल में प्रचलित वैवाहिक मंलग-गीत : एक अध्ययन–डॉ. संतोष कुमार 1040

भारतीय राजनीति में क्षेत्रियतावाद एवं भाषा का प्रश्न : एक अध्ययन–डॉ. सुधीर कुमार 1047

उम्र के साथ बदलती पोषण संबंधी आवश्यकताएं–डॉ. प्रज्ञा कुमारी 1051

नवजागरण और किसान सभा–चन्द्रमौली कुमार 1054

नवपाषाण युग–डॉ. पंकज कुमार पांडेय 1059

आर्थिक शिथिलता–डॉ. बिमलेश कुमार पाण्डेय 1066

ललितक कथामे चित्रित समाज–डॉ० गोपाल कुमार 1070

मुद्रास्फीति और महंगाई–डॉ. राकेश कुमार 1075

छायावाद के विकास में पण्डित मुकुटधर पाण्डेय का योगदान–डॉ. जयपाल सिंह प्रजापति; श्री बीरू लाल बरगाह 1079

स्वामी विवेकानंद के मानवतावाद और कांग्रेस की स्थापना तथा इतिहास–डॉ. संतोष कुमार राय 1086

बजट की प्रासंगिकता एवं समीक्षा 2020: एक विश्लेषणात्मक अध्ययन–इतेश कुमार सिंह 1089

"मौर्योत्तर कालीन भारत में सिंचाई व्यवस्था : एक विश्लेषण" (185 ई.पू. से 554 ई. तक) –डॉ. रंजीत कुमार राय; डॉ. नीता कुमारी 1092

क्रिश्चियन मिशनरी–डॉ. कुमारी अलका चौधरी 1097

बिहार के प्राचीन इतिहास के स्रोत–मधुलिका कुमारी 1100

लघु वित्त सहायता और आर्थिक सशक्तिकरण–डॉ. राजीव कुमार रंजन 1106

भारत के अलगाववादी आंदोलन–डॉ. गीतांजलि 1112

बिहार में कृषि एवं सिंचाई का इतिहास–डॉ. मनोज कुमार 1116

राजकमल चौधरी की हिन्दी और मैथिली कहानियाँ: एक सिक्के के दो पहलू–अनिरूद्ध कुमार यादव 1120

छायावाद के विकास में पण्डित मुकुटधर पाण्डेय का योगदान

डॉ. जयपाल सिंह प्रजापति

शोध निर्देषक,
विभागाध्यक्ष, हिंदी विभाग, पण्डित सुन्दरलाल शर्मा (मुक्त) वि.वि.छत्तीसगढ़, बिलासपुर

श्री बीरू लाल बरगाह

शोधार्थी, सहा. प्राध्यापक (हिंदी) राजीव गांधी शास. महाविद्यलय. सिमगापण्डित सुन्दरलाल शर्मा (मुक्त) वि.वि. छत्तीसगढ़, बिलासपुर

शोध सारांश :

पण्डित मुकुटधर पाण्डेय और छायावादी काव्य की सबसे महत्वपूर्ण उपलब्धि यह है कि उसने खड़ी बोली हिंदी को आधुनिक भावबोधा से युक्त रचनात्मक और समृधदपाली काव्यभाषा बनाने की पहल की। साहित्य के क्षेत्र में प्राय: यह देखा गया है कि पूर्ववर्ती युग के अभावों को पूर्ण करने के लिए परवर्ती युग का जन्म होता है। 'छायावाद' के मूल में भी यही सिधदान्त काम कर रहा है, क्योंकि द्विवेदी युगीन कविताएँ कोरी उपदेष मात्र रह गई। उसमे समाज सुधार की चर्चा व्यापक रूप से की गई है, कुछ आख्यानों का ही विवरण मिलता है, इतिवृत्तात्मक, उपदेपात्मकता और नैतिकता की प्रधानता के कारण कविता में निरसता आ गई, कवियों का हृदय उस नीरसता-से ऊब गया और कविता में सरसता लाने के लिए छटपटा उठे। इसके लिए छायावादी कवियों ने काव्य में 'वह' के स्थान पर 'मैं' शैली अपनायी। छायावादी कवियों ने काव्य की विषय वस्तु को अपने जीवन में ही ढूढ़ने का प्रयास किया। अपने जीवन के निजी प्रसंगों, घटनाओं एवं व्यक्तिगत भावनाओं को अनेक छायावादी कवियों ने काव्य का विपय वस्तु बनाया। मुकुटधर पाण्डेय जी की सूक्ष्म दृष्टि ने छायावाद की मूल भावना आत्मनिष्ठ अन्तर्दृष्टि को पहचान लिया। इस नीरसता से मुक्ति पाने के लिए पाण्डेय जी ने वैयक्तिक सुख-दुख; स्वयं की अनुभूति और प्रकृति को माधयम बनाया।

भूमिका :

बीसवीं शताब्दी की महान विभूतियों में से एक पद्मश्री साहित्य वाचस्पति पण्डित मुकुटधर पाण्डेय जी संक्रमण काल के सर्वाधिक सामर्थ्यवान कवियों में अग्रगण्य हैं। द्विवेदीयुग और छायावादी युग के बीच की एक महत्वपूर्ण कड़ी पाण्डेय जी की काव्य यात्र को समझे बिना खड़ी बोली हिंदी के विकास को सही ढंग से नहीं समझ सकते हैं। डॉ. बलदेव जी कहते हैं "पाण्डेय जी ने द्विवेदीयुग के शुष्क उद्यान में नूतन सूर भरा तथा नववंसत की अगुवानी कर युग प्रवर्तन का ऐतिहासिक कार्य किया।"[1] पाण्डेय जी के काव्य में द्विवेदी एवं छायावादी युगीन काव्य की सभी विपेशताएँ परिलक्षित होती है। एक ओर उनके काव्य में द्विवेदी युग के महान आदर्ष जिसमें लोकहित प्रमुखता से अभिव्यक्त होता है, तो वहीं दूसरी ओर आंतरिक सुन्दरता, सूक्ष्म चित्रण, किसी वस्तु या प्रकृति का असाधारण चित्र आदि छायावादी विपेशताएँ दृष्टव्य होती हैं। इस प्रकार हम देखते हैं कि पाण्डेय जी के काव्य लेखन में स्वच्छंदतावाद और आदर्पवाद जैसी दो विरोधी प्रवृत्तियाँ देखने को मिलती है। पाण्डेय जी सर्वप्रथम काव्य की उन्मुख हुए, उसके पश्चात् वे

विचारक, साहित्य समीक्षक, अनुवादक और गद्य साहित्य लेखक के रूप में प्रसिद्ध हुए। उनकी 'कुररी के प्रति' रचना को पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी जी ने प्रथम छायावादी कविता के रूप में स्वीकार किया।

छायावाद कहते ही एक ऐसे समय का बोध होता है कि उस समय के केन्द्र में छाया हो। छायावाद का समय 1918-1936 ई. तक मानी जाती है। उस समय जो काव्यांदोलन चला उसे हिंदी में छायावाद कहते हैं। हिंदी साहित्य का स्वर्णयुग भक्तिकाल को माना जाता है और आधुनिक हिंदी (खड़ी बोली) का स्वर्णयुग 'छायावाद' को माना जाता है। पण्डित मुकुटधर पाण्डेय ही 'छायावाद' के प्रवर्तक हैं।

शोध प्रविधि : प्रस्तुत शोधा प्रबंधा में सामाजिक, सांस्कृतिक एवं प्राकृतिक शोध का सहारा लिया गया है।

विवेचन :

पण्डित मुकुटधर पाण्डेय जी का जन्म 30 सितम्बर सन् 1895 ई. को बिलासपुर जिला वर्तमान में जांजगीर-चांपा जिले के बालपुर नामक ग्राम में हुआ था। महानदी के तट प्रदेप में बसा यह गाँव रायगढ़ सारंगढ़ मार्ग पर चन्द्रपुर के पूर्व दिशा में स्थित है। महानदी के पुल से देखने पर घनी अमराइयों से झाँकता हुआ बालपुर गाँव मानों प्रकृति की गोद में बैठा हुआ सा प्रतीत होता है। महानदी की सुन्दरता पर मुग्ध होकर पाण्डेय जी लिखते है -

"कितना सुन्दर और मनोहर, महानदी यह तेरा रूप।
कलकल मय निर्मल जलधारा; लहरों की है छटा अनूप।।" महानदी-1

पण्डित मुकुटधर पाण्डेय ने सन् 1920 ई. में जबलपुर मधयप्रदेश से निकलने वाली पत्रिका 'श्रीशारदा' में 'हिंदी में छायावाद शीर्षक' से चार निबंधों की एक लेखमाला छपवाई। इन चारों निबंधों में पांच बातों की ओर ध्यान इंगित किया है जिसमें वैयक्तिकता, स्वातंत्रय बोध, रहस्यवादिता, शैलीगत वैशिष्ट्य और अस्पष्टता।

'छायावाद' का नामकरण पण्डित मुकुटधर पाण्डेय जी ने किया है। डॉ. विनय मोहन शर्मा को एक पत्र में लिखा है-"छायावाद नाम सर्वथा मेरा गढ़ा हुआ है और मैंने परोक्ष सत्ता के प्रति अस्पष्ट रूप से व्यक्त भावों की रचना के लिए इसे प्रयुक्त किया था।"[2] 'कुररी के प्रति' रचना के बारे में उनका कहना है -"रात्रि में कुररी के करूण स्वर सुनकर बिस्तर पर पड़े पड़े मैंने मन में ही कुररी के प्रति की रचना कर डाली। तब मुझे आश्चर्य हुआ कि छायावाद लिखा नहीं जाता, अनुभूति द्वारा अपने आप ही लिख जाता है।"

श्रीशारदा 1920 में दूसरा लेख है 'छायावाद क्या है? प्रारंभिक पंक्तियाँ हैं" हिंदी में यह बिल्कुल नया शब्द है। अंग्रेजी या पाश्चात्य साहित्य अथवा बंग साहित्य की वर्तमान स्थिति की कुछ भी जानकारी रखने वाले समझ जाएँगे कि यह शब्द डलेजपबपेउ के लिए आया है।"[3]

यूरोपीय पुनर्जागरण की शुरूआत इटली में हुई है। इसी प्रकार भारतीय पुनर्जागरण की शुरूआत बंगाल में। बंगाल में ईसाई संतों द्वारा ईश्वर की प्रार्थना करते समय उन्हें अपने ऊपर ईश्वर की छाया का आभास होता था जिसे फैन्टेसमाटा (Fantasmata) कहते हैं। इस तरह की आध्यात्मिक छाया का भान अनुभूति रवीन्द्रनाथ टैगोर की कविताओं में दिखाई पड़ती है। रवीन्द्रनाथ टैगोर को उनकी कृति 'गीतांजलि' के लिए सन् 1913 ई. में साहित्य का प्रथम नोबल पुरूस्कार मिला और हिंदी के कवियों ने रवीन्द्रनाथ टैगोर की कविताओं का अनुकरण किया। तत्पश्चात् 'छायावाद' नाम से आंदोलन चल पड़ा।

छायावाद विशयक लेखमाला से पहले मार्च 1920 ई. हितकारिणी पत्रिका में छायावाद की संक्षिप्त परिभाषा 'चरणप्रसाद' नामक कविता में दी है -

"भाषा क्या वह छायावाद
है न कहीं उसका अनुवाद"[4]

छायावाद शब्द का प्रथम प्रयोग सन् 1920 ई. के आसपास "द्विवेदी युग के वयोवृद्ध साहित्यकारों और आलोचकों ने निंदा या घृणा के भाव से नहीं 24-25 वर्षों के एक अधकचरे नवयुवक ने सद्भावना पूर्वक किया था।"[5] ये नवयुवक और कोई नहीं स्वयं मुकुटधर पाण्डेय जी थे।

पण्डित मुकुटधर पाण्डेय और छायावादी काव्य की सबसे बड़ी उपलब्धि यह है कि उसने खड़ी बोली हिंदी को आधुनिक भावबोध से युक्त रचनात्मक और समृद्धशाली काव्यभाषा बनाने की पहल की। 'हिंदी में छायावाद' निबंधा के प्रथम निबंध 'कवि स्वातंत्र्य' में पाण्डेय जी ने रीति ग्रंथों की परतंत्रता से मुक्त होकर काव्य में व्यक्तित्व तथा भाव, छन्द, भाषा के प्रकाशन रीति में मौलिकता की आवश्यकता पर जोर दिया है।

''छायावाद एक ऐसी मायामय सूक्ष्म वस्तु है कि शब्दों द्वारा उसका ठीक-ठीक वर्णन करना असंभव है। शब्द अपने स्वाभाविक मूल्य खोकर सांकेतिक चिन्ह मात्र हुआ करते हैं।''[6]

छायावाद के कवि वस्तुओं को असाधारण दृष्टि से देखते हैं। उनकी रचना की सम्पूर्ण विपेशताएँ उनकी इस दृष्टि पर आधारित रहती है, वह क्षणभर में वस्तुओं को बिजली की तरह स्पर्श करती हुई निकल जाती है। अस्थिरता और क्षीणता के साथ उसमें एक तरह की विचित्र उन्मादकता और अंतरंगता होती है जिसके कारण वस्तु उसके प्राकृतिक रूप से भिन्न रूप में दिखाई पड़ती है। यह अंतरंग दृष्टि ही छायावाद की विचित्र प्रकाशन रीति का मूल है। उसमें किसी वस्तु या दृश्य का ज्यों का त्यों चित्र लिया जाता है पर शब्द ऐसे वेगयुक्त होते है कि भाषा उड़ती हुई जान पड़ती है। ऐसी रचनाओं में शब्द अपने वास्तविक मूल्य खोकर सांकेतिक चिहन मात्र होते हैं।

इस प्रकार मुकुटधर पाण्डेय जी की सूक्ष्म दृष्टि ने छायावाद के मूलभावना आत्मनिष्ठ अन्तर्दृष्टि को पहचान लिया था। निबंध 'हिंदी में छायावाद' इस निबंध के माध्यम से छायावाद पर लगाये गये अस्पष्टता आदि आरोपों का खण्डन करते हुए लिखते हैं-''छायावाद की आवश्यकता हम इसलिए समझते हैं कि उससे कवियों को भाव प्रकाशन का एक नया मार्ग मिलेगा। इस प्रकार के अनेक मार्गों अनेक रीतियों का होना ही उन्नत साहित्य का लक्षण है।''[7]

मुकुटधर पाण्डेय की रचनाओं में मन के बंधन की पीड़ा की अभिव्यक्ति है जो स्वतंत्रता प्राप्ति के लिए छटपटा रही है। काव्य स्वातंत्र्य में पाण्डेय जी के शब्द हैं संसार में प्रत्येक मनुष्य स्वतंत्रता चाहता है, फिर भी उसे मानसिक भूमि में परतंत्र रहना क्यों पसंद होगा यह बात समझ मे नहीं आती।

डॉ. नामवर सिंह का कथन है-''छायावाद का ऐतिहासिक एवं तात्विक विवेचन छायावाद पर पहला निबंध होने के साथ ही एक अत्यन्त सूझबूझ प्रभावशाली समीक्षा भी है। इस निबंध का महत्व ऐतिहासिक ही नहीं, स्थायी भी है।''[8] पाण्डेय जी ने भावों की छाया या अस्पष्ट-अप्रत्यक्ष स्वरूप के लिए सांकेतिक अभिव्यक्ति हेतु छायावाद नाम सुझाया। वे छायावाद की क्लिष्टता को सरल बनाकर जन सामान्य में लोकप्रिय बनाने के पक्षपाती रहे। पाण्डेय जी के 'कविता' शीर्षक निबंध काव्यादर्श और छायावाद के पर्याय को प्रमाणित करते हैं। वे काव्य में लोकगीतों की सरसता व श्रम-शक्ति का समावेश करना चाहते थे। उनका ध्यान गाँव में काम करने वाले गरीब किसानों, मजदूरों की ओर गया। उन्होंने श्रम की महिमा गाई –

''धन्य तुम ग्रामीण किसान
सरलता, प्रिय औदार्य निधान
छोड़ जन संकुल नगर निवास
किया क्यों विजन ग्राम में गेह
नहीं प्रासादों की कुछ चाह
कुटीरों से क्यों इतना नेह।'' -किसान

पाण्डेय जी काव्यकला को स्पष्ट करते हुए कहते है कि-हृदयग्राही भाषा चित्र का नाम ही काव्य है, कविता प्रभावोत्पादक और मनोरंजक होती है। सौंदर्य वर्णन के सिवाय कविता में कुछ ऐसी विशेषता होनी चाहिए कि उसके पाठ से सर्वत्र ईश्वरीय भाव अथवा एक अदृश्य शक्ति या किसी अखण्ड नियम की व्यापकता या प्रधानता हो। साथ ही वे कहते है कि मानव जीवन का प्रवाह जब आध्यात्मिक भावों के समुद्र में जाकर लीन हो जाता है, तब वह अपने अंतिम लक्ष्य पर पहुँच जाता है।

प्रथम विश्वयुद्ध के पश्चात् भारतीय जनता निराशा के सागर में डूब रही थी। ब्रिटिश सत्ता के अत्याचार के कारण कवियों में अंसतोश और विद्रोह के भाव थे, वे इसे व्यक्त करने में असमर्थ रहे। इस संक्रमण काल में कविता शीर्षक निबंधा के अंतर्गत पाण्डेय जी ने नवयुवक कवियों को प्रोत्साहित करते हुए लिखा है-''हमारे कवि और लेखक इस ओर सचेष्ट है और वे देश की आवश्यकता

को समझकर जन जागरण, एकता वीरता और स्वतंत्रता आदि के भाव बराबर फैला रहे हैं। यह बहुत ही शुभ लक्षण हैं और शीघ्र ही अभीष्ट फल की प्राप्ति होगी।''[9]

- देश की दुर्दशा पर चिंता व्यक्त करते हुए कवि आर्य सन्तानों को जागृत करने का संकल्प लेते हैं। उठो चेतो की यह पंक्तियाँ उल्लेखनीय है :

''उठो हे आर्य सन्तानों, सबेरा हो चुका प्यारे।
समय यह है न सोने का तजो आलस्य को भाई।
लगो कर्तव्य में अपने भगे दारिद्रय दुःखदाई।
उदय हो सौख्य सूरज का गगन में लालिमा छाई।'' -उठो चेतो

पण्डित मुकुटधर पाण्डेय की रचनाओं में साहित्य मनीशियों ने छायावाद की झलक देखी और सराहा। पाण्डेय जी ने श्री शारदा पत्रिका में विस्तार से प्रकाश डाला जो उनके चिंतन और अध्ययन की अमूल्य निधि है। छायावाद के प्रवर्तक कवि उन्हें माना जाता है पर वे विनम्रतापूर्वक कहते हैं कि ''मेरी रचनाओं में चाहे लोग जो भी खोज ले परन्तु वे विशुद्ध रूप से मेरी रचनाओं पर आंतरिक सहमज अभिव्यक्ति मात्र है। उनमें न तो कल्पना की ऊँची उड़ान है न विचारों की उलझन, न भावों की दुरूहता। उनमें उर्दू की चीजों की चुलबुलाहट या बांकपन भी नहीं। वह सरल सहज उद्‌गार मात्र है।''[10]

पण्डित मुकुटधर पाण्डेय ने 'हिंदी में छायावाद' नामक निबंध के माध्यम से 'छायावाद' का प्रर्वतन किया। पाण्डेय जी का पद्य और गद्य दोनों में समान अधिकार है। उनकी रचनाओं की सूची प्रस्तुत है-

1. पूजाफूल (काव्य संग्रह)-ब्रह्म प्रेस, इटावा : 1916
2. शैलबाला (अनूदित उपन्यास)-हरिदास एंड कंपनी कलकत्ता, 1916
3. परिश्रम (निबंधा संग्रह)-हरिदास एंड कंपनी कलकत्ता : 1917
4. लच्छमा (अनूदित उपन्यास)-हरिदास एंड कंपनी कलकत्ता : 1917
5. हृदयदान (कहानी संग्रह)-गल्पमाला, बनारस : 1918
6. मामा (अनूदित उपन्यास)-रिखवदास वाहिनी एंड कंपनी, उड़ीसा : 1924
7. छायावाद एवं अन्य निबंध-म.प्र. साहित्य सम्मेलन, भोपाल : 1979
8. स्मृतिपुंज-तिरूपति प्रकाशन, हापुड़ : 1983
9. विश्वबोध-श्री शारदा साहित्य सदन, रायगढ़ : 1984
10. छत्तीसगढ़ी मेघदूत-(अनूदित काव्य)-छत्तीसगढ़ लेखक संघ, रायगढ़ : 1984
11. हिंदी में छायावाद-तिरूपति प्रकाशन, हापुड़ : 1984

पण्डित मुकुटधर पाण्डेय जी से संबंधित अनेक संपादित पुस्तकों में प्रमुख हैं –

1. मुकुटधर पाण्डेय : व्यक्ति एवं रचना-सं. महावीर अग्रवाल, श्री प्रकाशन, दुर्ग (छ.ग.) : 2001
2. पण्डित मुकुटधर पाण्डेय चयनिका-छत्तीसगढ़ राज्य हिंदी ग्रंथ अकादमी, रायपुर : 2007

पण्डित मुकुटधर पाण्डेय जी के काव्य सरल और सहज है। उनमें अंत: सौंदर्य और आध्यात्मिक भावनाओं की प्रमुखता है जो छायावादी काव्य की प्रमुख विशेषता है। उनके पास एक सरल अनुभूति जिज्ञासायें हैं, शब्दों का आडम्बर नहीं है। कबीरदास की भांति वे लिखते हैं –

यह दुनिया बाजार रूप है,
लोग बाजारी हैं भाई।
काम, क्रोध, मद, लोभ जनति है
वस्तु यहाँ बिकने आई।

कवि को ईश्वरीय सत्ता का आभास पतितों के दुख में दीन-हीन के अश्रु नीर में, कृषक के हल में और कवि के काव्य में मिलता है -

"दीन हीन के अश्रु नीर में
पतितों के परिताप पीर में
सरल स्वभाव कृषक के हल में
पतिव्रता रमणी के बल में
श्रम सीकर से सिंचित धान में
तेरा मिला प्रमाण।" - विश्वबोध

छत्तीसगढ़ की मिट्टी से उन्हें विशेष अनुराग था। यहाँ की प्राकृतिक सौंदर्य नदी-पहाड़, पशु, पक्षी से लगाव था। महानदी कविता की पंक्तियाँ प्रस्तुत हैं -

"कितना सुन्दर और मनोहर महानदी यह तेरा रूप
कलकल मय निर्मल, जलधारा, लहरों की है छटा अनूप
तुझे देखकर शैशव की स्मृतियाँ उर में उठती जाग
लेता है कैशोर काल का अँगड़ाई अल्हड़ अनुराग।" -महानदी

पाण्डेय जी के काव्य संग्रह पूजाफूल में महानदी ग्राम गुणगान, फूल, गुलाब, प्रभात, संध्या ऋतुओं का वर्णन आदि प्रकृति परक कविताएँ हैं। प्रकृति के प्रति कवि की गहरी आत्मीयता है -

"हरित पल्लवित नववृक्षों के दृश्य मनोहर।
होते मुझको विश्व बीच है जैसे सुखकर।
सुखकर वैसे अन्य दृश्य होते न कभी हैं।
उनके आगे तुच्छ परम वे मुझे सभी हैं।।" - मेरा प्रकृति प्रेम

ग्राम्य जीवन का वर्णन करते हुए कवि ने प्राय: पनघट और पनिहारिनों का वर्णन किया है। इस प्रसंग में पाण्डेय जी ने सहज भावों को ही अभिव्यक्ति दी है :

"पनिहारिन पानी लेने को,
पंक्ति बाँध कर जाती हैं।
सिर पर नीर पूर्ण मिट्टी के,
कलसे ले-ले आती हैं।।"

रात्रि के समय कुररी के करूण विलाप को सुनकर पाण्डेय जी का ह्रदय करूणा से भर उठा। मन ही मन 'कुररी के प्रति' काव्य की रचना कर डाली। 'कुररी के प्रति' हिंदी काव्य साहित्य की एक ऐसी अमर रचना है जिसने युग निर्माण का कार्य किया है। पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी ने 'कुररी के प्रति' रचना को प्रथम छायावादी काव्य माना है। पंक्ति प्रस्तुत है -

"बता मुझे ऐ विहग विदेशी अपने जी की बात
पिछड़ा था तू कहां, आ रहा जो कर इतनी रात।" - कुररी के प्रति

गद्य और पद्य दोनों में पाण्डेय जी का समान अधिकार है। हिंदी के अतिरिक्त संस्कृत, उड़िया, बंगला और अंग्रेजी भाषा का भी ज्ञान था। उनकी प्रकाशित गद्य है-'पूजाफूल', 'शैलबाला', 'मामा', 'लच्छमा', 'परिश्रम' और 'ह्रदयदान' है। उन्होंने महाकवि कालिदास की कालजयी कृति 'मेघदूतम्' का छत्तीसगढ़ी में भावपूर्ण अनुवाद किया। जो छत्तीसगढ़ी भाषा के संवर्धन और विकास में मील के पत्थर सिद्ध होते हैं। कथा के प्रारंभ में कहा गया है -

"यक्ष एक हर अपन काम मा
गलती कछु कर डारिस
तव कुबेर हर शाप छोड़ अलका ले
ओला निकारिस।"
-मेघदूत (छत्तीसगढ़ी)

पण्डित मुकुटधर पाण्डेय काव्य चर्चा के दौरान कालिदास, भवभूति, तुलसीदास, कबीर, मीरा, सूरदास, शेली, मेंटरलिंक, रवीन्द्रनाथ ठाकुर, माइकेल मधुसूदन दत्त, फकीर मोहन सेनापति, मिर्जा गालिब के जीवन से लेकर उनके साहित्य की चर्चा करते थे। अपने समकालीन कवियों में मैथिलीशरण गुप्त और प्रसादजी की चर्चा करते थे। महाकवि कालिदास और तुलसीदास उनके सबसे प्रिय कवि हैं। 'अभिज्ञान शाकुन्तलम्' और 'विनय पत्रिका' उनके सर्वाधिक प्रिय ग्रंथों में से हैं। पाण्डेय जी महात्मा गाँधी जी के विचारों से प्रभावित थे। गाँधी पर वे लिखते हैं -

"तुम शुद्ध बुद्ध की परम्परा में आये
मानव थे ऐसे, देख की देव लजाये
भारत के ही क्यों, अखिल लोक के भ्राता
तुम आये बन दलितों के भाग्य विधाता।"
- गांधी के प्रति

इस प्रकार पाण्डेय जी के साहित्य में भाषा को अपनी संस्कृति और संवेदनात्मक ऊर्जा के अमूर्त संसार को व्यक्त करने की बिम्बात्मक रचना, भावात्मक तथ्यों को अभिव्यक्त करने वाल सांकेतिकता, संवेदना की तीव्रता को प्रेशित करने वाली प्रतीकात्मकता उसने प्रदान की है। भाषा के प्रति परंपरागत वस्तु दृष्टि के बंधनों को तोड़कर उसने अपनी भाव दृष्टि से वस्तु को नए रूप में प्रस्तुत किया। शब्दों का अर्थ, भावबोध और संवेदना के नवीन संस्कारों के अनुरूप ढालने की एकाग्र कोशिश पण्डित मुकुटधर पाण्डेय ने किया। इसके लिए हिंदी साहित्य जगत में वे सदैव प्रासंगिक रहेंगे। अपने देशकाल के परिवर्तित जीवन संदर्भों, आशा, आकांक्षाओं और यथार्थ के बदलते सरगम के अनुरूप एक नयी सामाजिक और विश्व दृष्टि से विकसित करने को भरसक कोशिश की है।

निष्कर्ष :

व्यक्ति स्वातंत्र्य और रूढ़ियों से विद्रोह की भावना ने पाण्डेय जी को अपना एक निजी और वैयक्तिक मुहावरा तलाश करने के लिए प्ररित किया था, वह अपनी रणनीति में नितांत व्यक्तिगत, व्यक्तिनिष्ठ और व्यक्तिवादी होता गया। पाण्डेय जी के साहित्य आधुनिकता के सारे प्रतिमानों पर खरी उतरती है और वह पूर्ण रूप से आधुनिक है। इसलिए वह सदैव प्रासंगिक रहेगी। नामवर सिंह जी का छायावाद के परिप्रेक्ष्य में कथन है -"छायावाद उस राष्ट्रीय जागरण की काव्यात्मक अभिव्यक्ति है जो एक ओर पुरानी रूढ़ियों से मुक्ति चाहता है और दूसरी ओर विदेषी पराधीनता से।"[11] नामवर सिंह ने मुक्ति को केन्द्र में रखा और स्वाधीनता की बात कही। रूढ़ियाँ समाज को कमजोर बना रही थी विदेशी पराधीनता अर्थात् अंग्रेजों की गुलामी से मुक्ति। इन सामयिक तथ्यों के माध्यम से वे 'छायावाद' को युग संदर्भ से जोड़ते हैं।

पाण्डेय जी के काव्य में प्रकृति के माध्यम से मानव को स्वतंत्रता की ओर संकेत करते हैं क्योंकि प्रकृति के सारे उपादान पर्वत, नदी, झरने, पेड़-पौधे, चिड़ियाँ, सूर्य का प्रकाश, जल, वायु आदि स्वतंत्र हैं, इन्हें कोई गुलाम नहीं बना सकता है।

'हिंदी में छायावाद' और 'कुररी' जैसी अमर ऐतिहासिक रचना का सृजन कर 6 नवम्बर 1989 ई. को पंचतत्व में विलीन हो गये। जीवन के अंतिम क्षण के संबंध में पाण्डेय जी की निम्न पंक्तियाँ उल्लेखनीय है-

"जीवन की संध्या में अब तो है केवल इतना मन-काम
अपनी ममतामयी गोद में, दे मुझको अंतिम विश्राम।।
चित्रेत्पले, बता तू मुझको वह दिन सचमुच कितना दूर।
प्राण प्रतीक्षारत् लूटेंगे, मृत्यु पर्व का सुख भरपूर।।"

महानदी-1

खड़ी बोली हिंदी के विकास, उत्कर्ष में छायावाद और पण्डित मुकुटधर पाण्डेय के साहित्य की प्रासंगिकता सदैव बनी रहेगी।

संदर्भ ग्रंथ सूची -

1. पण्डित मुकुटधर पाण्डेय चयनिका, (प्रस्तावना से) प्रो. दिनेश पाण्डेय डॉ. बिहारी लाल साहू।
2. साहित्यान्वेषण, विनय मोहन शर्मा; पृ. क्र. 14-15।
3. छायावाद और मुकुटधर पाण्डेय, सं डॉ. बलदेव साव; पृ. क्र. 136।
4. पण्डित मु. पा. चयनिका, (प्रस्तावना से) सं. प्रो. दिनेश पाण्डेय डॉ. बिहारी लाल साहू।
5. छायावाद और मुकुटधर पाण्डेय, संपादक डॉ. बलदेव साव; पृ. क्र. 138।
6. पण्डित मु. पा. चयनिका, संपादक प्रो. दिनेश पाण्डेय डॉ. बिहारी लाल साहू; प. क्र. 139।
7. पण्डित मु. पा. चयनिका, संपादक प्रो. दिनेश पाण्डेय डॉ. बिहारी लाल साहू; पृ. क्र. 151।
8. मुकुटधर पाण्डेय व्यक्ति एवं रचना, संपादक महावीर अग्रवाल (विनय पाठक आलेख); पृ क्र. 93।
9. मुकुटधर पाण्डेय व्यक्ति एवं रचना, संपादक महावीर अग्रवाल (विनय पाठक आलेख); पृ क्र. 95।
10. मुकुटधर पाण्डेय व्यक्ति एवं रचना, संपादक महावीर अग्रवाल; पृ. क्र. 75।
11. मुकुटधर पाण्डेय व्यक्ति एवं रचना, (छायावाद लेख नामवर सिंह); पृ. क्र. 177।

छायावाद और मुकुटधर पाण्डेय के साहित्य की प्रासंगिकता

शोध निर्देशक
डॉ. जयपाल सिंह प्रजापति
विभागाध्यक्ष, हिंदी विभाग
पण्डित सुन्दरलाल शर्मा (मुक्त)
विश्वविद्यालय छत्तीसगढ़ बिलासपुर

शोधार्थी एवं प्रस्तुतकर्ता
बीरू लाल बरगाह
सहायक प्राध्यापक हिंदी
राजीव गांधी शास. महाविद्यालय
सिमगा, जिला बलौदाबाजार (छ.ग.)

बीसवी शताब्दी की महान विभूतियों में से एक पद्मश्री साहित्य वाचस्पति पण्डित मुकुटधर पाण्डेय जी संक्रमण काल के सर्वाधिक सामर्थ्यवान कवियों में अग्रगण्य हैं। द्विवेदीयुग और छायावादी युग के बीच की एक महत्वपूर्ण कड़ी पाण्डेय जी की काव्य यात्रा को समझे बिना खड़ी बोली हिंदी के विकास को सही ढंग से नहीं समझ सकते हैं। डॉ. बलदेव जी कहते हैं "पाण्डेय जी ने द्विवेदीयुग के शुष्क उद्यान में नूतन सूर भरा तथा नवबंसत की अगुवानी कर युग प्रवर्तन का ऐतिहासिक कार्य किया।"[1] पाण्डेय जी के काव्य में द्विवेदी एवं छायावादी युगीन काव्य की सभी विशेषताएँ परिलक्षित होती है। एक ओर उनके काव्य में द्विवेदी युग के महान आदर्श जिसमें लोकहित प्रमुखता से अभिव्यक्त होता है, तो वहीं दूसरी ओर आंतरिक सुन्दरता, सूक्ष्म चित्रण, किसी वस्तु या प्रकृति का असाधारण चित्र आदि छायावादी विशेषताएँ दृष्टव्य होती हैं। इस प्रकार हम देखते हैं कि पाण्डेय जी के काव्य लेखन में स्वच्छंदतावाद और आदर्शवाद जैसी दो विरोधी प्रवृत्तियाँ देखने को मिलती है। पाण्डेय जी सर्वप्रथम काव्य की उन्मुख हुए, उसके पश्चात् वे विचारक, साहित्य समीक्षक, अनुवादक और गद्य साहित्य लेखक के रूप में प्रसिद्ध हुए। उनकी 'कुररी के प्रति' रचना को पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी जी ने प्रथम छायावादी कविता के रूप में स्वीकार किया।

छायावाद कहते ही एक ऐसे समय का बोध होता है कि उस समय के केन्द्र में छाया हो। छायावाद का समय 1918–1936 ई. तक मानी जाती है। उस समय जो काव्यांदोलन चला उसे हिंदी में छायावाद कहते हैं। हिंदी साहित्य का स्वर्णयुग भक्तिकाल को माना जाता है और आधुनिक हिंदी (खड़ी बोली) का स्वर्णयुग 'छायावाद' को माना जाता है। पण्डित मुकुटधर पाण्डेय ही 'छायावाद' के प्रवर्तक हैं।

पण्डित मुकुटधर पाण्डेय जी का जन्म 30 सितम्बर सन् 1895 ई. को बिलासपुर जिला वर्तमान में जांजगीर–चांपा जिले के बालपुर नामक ग्राम में हुआ था । महानदी के तट प्रदेश में बसा यह गाँव रायगढ सारंगढ मार्ग पर चन्द्रपुर के पूर्व दिशा में स्थित है । महानदी के पुल से देखने पर घनी अमराइयों से झाँकता हुआ बालपुर गाँव मानों प्रकृति की गोद में बैठा हुआ सा प्रतीत होता है । महानदी की सुन्दरता पर मुग्ध होकर पाण्डेय जी लिखते है –

"कितना सुन्दर और मनोहर, महानदी यह तेरा रूप ।
कलकल मय निर्मल जलधारा; लहरों की है छटा अनूप ।।"

महानदी–1

पण्डित मुकुटधर पाण्डेय ने सन् 1920 ई. में जबलपुर मध्यप्रदेश से निकलने वाली पत्रिका 'श्रीशारदा' में 'हिंदी में छायावाद शीर्षक' से चार निबंधों की एक लेखमाला छपवाई। इन चारों निबंधों में पांच बातों की ओर ध्यान इंगित किया है जिसमें वैयक्तिकता, स्वातंत्र्य बोध, रहस्यवादिता, शैलीगत वैशिष्ट्य और अस्पष्टता।

'छायावाद' का नामकरण पण्डित मुकुटधर पाण्डेय जी ने किया है। डॉ. विनय मोहन शर्मा को एक पत्र में लिखा है – "छायावाद नाम सर्वथा मेरा गढ़ा हुआ है और मैंने परोक्ष सत्ता के प्रति अस्पष्ट रूप से व्यक्त भावों की रचना के लिए इसे प्रयुक्त किया था।"[2] 'कुररी के प्रति' रचना के बारे में उनका कहना है –"रात्रि में कुररी के करूण स्वर सुनकर बिस्तर पर पडे पड़े मैंने मन में ही कुररी के प्रति की रचना कर डाली। तब मुझे आश्चर्य हुआ कि छायावाद लिखा नहीं जाता, अनुभूति द्वारा अपने आप ही लिख जाता है।"

श्रीशारदा 1920 में दूसरा लेख है 'छायावाद क्या है ? प्रारंभिक पंक्तियाँ हैं" हिंदी में यह बिल्कुल नया शब्द है। अंग्रेजी या पाश्चात्य साहित्य अथवा बंग साहित्य की वर्तमान स्थिति की कुछ भी जानकारी रखने वाले समझ जाएँगे कि यह शब्द Mysticism के लिए आया है।"[3]

3

यूरोपीय पुनर्जागरण की शुरूआत इटली में हुई है। इसी प्रकार भारतीय पुनर्जागरण की शुरुआत बंगाल में। बंगाल में ईसाई संतों द्वारा ईश्वर की प्रार्थना करते समय उन्हें अपने ऊपर ईश्वर की छाया का आभास होता था जिसे फैन्टेसमाटा (fantasmata) कहते हैं। इस तरह की आध्यात्मिक छाया का भान अनुभूति रवीन्द्रनाथ टैगोर की कविताओं में दिखाई पड़ती है । रवीन्द्रनाथ टैगोर को उनकी कृति 'गीतांजलि' के लिए सन् 1913 ई. में साहित्य का प्रथम नोबल पुरूस्कार मिला और हिंदी के कवियों ने रवीन्द्रनाथ टैगोर की कविताओं का अनुकरण किया। तत्पश्चात् 'छायावाद' नाम से आंदोलन चल पड़ा।

छायावाद विषयक लेखमाला से पहले मार्च 1920 ई. हितकारिणी पत्रिका में छायावाद की संक्षिप्त परिभाषा 'चरणप्रसाद' नामक कविता में दी है –

"भाषा क्या वह छायावाद
है न कहीं उसका अनुवाद"[4]

छायावाद शब्द का प्रथम प्रयोग सन् 1920 ई. के आसपास "द्विवेदी युग के वयोवृद्ध साहित्यकारों और आलोचकों ने निंदा या घृणा के भाव से नहीं 24–25 वर्ष के एक अधकचरे नवयुवक ने सद्भावना पूर्वक किया था।"[5] ये नवयुवक और कोई नहीं स्वयं मुकुटधर पाण्डेय जी थे।

पण्डित मुकुटधर पाण्डेय और छायावादी काव्य की सबसे बड़ी उपलब्धि यह है कि उसने खड़ी बोली हिंदी को आधुनिक भावबोध से युक्त रचनात्मक और समृद्धशाली काव्यभाषा बनाने की पहल की। 'हिंदी में छायावाद' निबंध के प्रथम निबंध 'कवि स्वातंत्र्य' मे पाण्डेय जी ने रीति ग्रंथों की परतंत्रता से मुक्त होकर काव्य में व्यक्तित्व तथा भाव, छन्द, भाषा के प्रकाशन रीति में मौलिकता की आवश्यकता पर जोर दिया है।

"छायावाद एक ऐसी मायामय सूक्ष्म वस्तु है कि शब्दों द्वारा उसका ठीक–ठीक वर्णन करना असंभव है। शब्द अपने स्वाभाविक मूल्य खोकर सांकेतिक चिन्ह मात्र हुआ करते हैं।"[6]

छायावाद के कवि वस्तुओं को असाधारण दृष्टि से देखते हैं। उनकी रचना की सम्पूर्ण विशेषताएँ उनकी इस दृष्टि पर आधारित रहती है, वह क्षणभर में वस्तुओं को बिजली की तरह स्पर्श करती हुई निकल जाती है। अस्थिरता और क्षीणता के साथ उसमें एक तरह की विचित्र उन्मादकता और अंतरंगता होती है जिसके कारण वस्तु उसके प्राकृतिक रूप से भिन्न रूप में दिखाई पड़ती है। यह अंतरंग दृष्टि ही छायावाद की विचित्र प्रकाशन रीति का मूल है। उसमें किसी वस्तु या दृश्य का ज्यों का त्यों चित्र लिया जाता है पर शब्द ऐसे वेगयुक्त होते हैं कि भाषा उड़ती हुई जान पड़ती है। ऐसी रचनाओं में शब्द अपने वास्तविक मूल्य खोकर सांकेतिक चिहन मात्र होते हैं।

इस प्रकार मुकुटधर पाण्डेय जी की सूक्ष्म दृष्टि ने छायावाद के मूलभावना आत्मनिष्ठ अन्तर्दृष्टि को पहचान लिया था। निबंध 'हिंदी में छायावाद' इस निबंध के माध्यम से छायावाद पर लगाये गये अस्पष्टता आदि आरोपों का खण्डन करते हुए लिखते हैं – "छायावाद की आवश्यकता हम इसलिए समझते हैं कि उससे कवियों को भाव प्रकाशन का एक नया मार्ग मिलेगा। इस प्रकार के अनेक मार्गों अनेक रीतियों का होना ही उन्नत साहित्य का लक्षण है।"[7]

मुकुटधर पाण्डेय की रचनाओं में मन के बंधन की पीड़ा की अभिव्यक्ति है जो स्वतंत्रता प्राप्ति के लिए छटपटा रही है। काव्य स्वातंत्र्य में पाण्डेय जी के शब्द हैं संसार में प्रत्येक मनुष्य स्वतंत्रता चाहता है, फिर भी उसे मानसिक भूमि में परतंत्र रहना क्यों पसंद होगा यह बात समझ मे नहीं आती।

डॉ. नामवर सिंह का कथन है – "छायावाद का ऐतिहासिक एवं तात्विक विवेचन छायावाद पर पहला निबंध होने के साथ ही एक अत्यन्त सूझबूझ प्रभावशाली समीक्षा भी है। इस निबंध का महत्व ऐतिहासिक ही नहीं, स्थायी भी है।"[8] पाण्डेय जी ने भावों की छाया या अस्पष्ट–अप्रत्यक्ष स्वरूप के लिए सांकेतिक अभिव्यक्ति हेतु छायावाद नाम सुझाया। वे छायावाद की क्लिष्टता को सरल बनाकर जन सामान्य में लोकप्रिय बनाने के पक्षपाती रहे। पाण्डेय जी के 'कविता' शीर्षक निबंध काव्यादर्श और छायावाद के पर्याय को प्रमाणित करते हैं। वे काव्य में लोकगीतों की सरसता व श्रम–शक्ति का समावेश करना चाहते थे। उनका ध्यान गाँव में काम करने वाले गरीब किसानों, मजदूरों की ओर गया। उन्होंने श्रम की महिमा गाई –

"धन्य तुम ग्रामीण किसान
सरलता, प्रिय औदार्य निधान
छोड़ जन संकुल नगर निवास
किया क्यों विजन ग्राम में गेह
नहीं प्रासादों की कुछ चाह
कुटीरों से क्यों इतना नेह।"

–किसान

पाण्डेय जी काव्यकला को स्पष्ट करते हुए कहते हैं कि – हृदयग्राही भाषा चित्र का नाम ही काव्य है, कविता प्रभावोत्पादक और मनोरंजक होती है। सौंदर्य वर्णन के सिवाय कविता में कुछ ऐसी विशेषता होनी चाहिए कि उसके पाठ से सर्वत्र ईश्वरीय भाव अथवा एक अदृश्य शक्ति या किसी अखण्ड नियम की व्यापकता या प्रधानता हो। साथ ही वे कहते हैं कि मानव जीवन का प्रवाह जब आध्यात्मिक भावों के समुद्र में जाकर लीन हो जाता है, तब वह अपने अंतिम लक्ष्य पर पहुँच जाता है।

प्रथम विश्वयुद्ध के पश्चात् भारतीय जनता निराशा के सागर में डूब रही थी। ब्रिटिश सत्ता के अत्याचार के कारण कवियों में असंतोष और विद्रोह के भाव थे, वे इसे व्यक्त करने में असमर्थ रहे। इस संक्रमण काल में कविता शीर्षक निबंध के अंतर्गत पाण्डेय जी ने नवयुवक कवियों को प्रोत्साहित करते हुए लिखा है – "हमारे कवि और लेखक इस ओर सचेष्ट है और वे देश की आवश्यकता को समझकर जन जागरण, एकता वीरता और स्वतंत्रता आदि के भाव बराबर फैला रहे हैं। यह बहुत ही शुभ लक्षण हैं और शीघ्र ही अभीष्ट फल की प्राप्ति होगी।"[9]

देश की दुर्दशा पर चिंता व्यक्त करते हुए कवि आर्य सन्तानों को जागृत करने का संकल्प लेते हैं। उठो चेतो की यह पंक्तियाँ उल्लेखनीय है :

"उठो हे आर्य सन्तानों, सबेरा हो चुका प्यारे।
समय यह है न सोने का तजो आलस्य को भाई।
लगो कर्तव्य में अपने भगे दारिद्रय दुःखदाई।
उदय हो सौख्य सूरज का गगन में लालिमा छाई।"

–उठो चेतो

पण्डित मुकुटधर पाण्डेय की रचनाओं में साहित्य मनीषियों ने छायावाद की झलक देखी और सराहा। पाण्डेय जी ने श्री शारदा पत्रिका में विस्तार से प्रकाश डाला जो उनके चिंतन और अध्ययन की अमूल्य निधि है। छायावाद के प्रवर्तक कवि उन्हें माना जाता है पर वे विनम्रतापूर्वक कहते हैं कि "मेरी रचनाओं में चाहे लोग जो भी खोज ले परन्तु वे विशुद्ध रूप से मेरी रचनाओं पर आंतरिक सहमज अभिव्यक्ति मात्र है। उनमें न तो कल्पना की ऊँची उड़ान है न विचारों की उलझन, न भावों की दुरूहता। उनमें उर्दू की चीजों की चुलबुलाहट या बांकपन भी नहीं। वह सरल सहज उद्गार मात्र है।"[10]

पण्डित मुकुटधर पाण्डेय ने 'हिंदी में छायावाद' नामक निबंध के माध्यम से 'छायावाद' का प्रर्वतन किया। पाण्डेय जी का पद्य और गद्य दोनों में समान अधिकार है। उनकी रचनाओं की सूची प्रस्तुत है –

01) पूजाफूल (काव्य संग्रह) – ब्रह्म प्रेस, इटावा : 1916
(02) शैलबाला (अनूदित उपन्यास) – हरिदास एंड कंपनी कलकत्ता, 1916
03) परिश्रम (निबंध संग्रह) – हरिदास एंड कंपनी कलकत्ता : 1917
04) लच्छमा (अनूदित उपन्यास) – हरिदास एंड कंपनी कलकत्ता : 1917
05) हृदयदान (कहानी संग्रह) – गल्पमाला, बनारस : 1918
06) मामा (अनूदित उपन्यास) – रिखवदास वाहिनी एंड कंपनी, उड़ीसा : 1924
07) छायावाद एवं अन्य निबंध – म.प्र. साहित्य सम्मेलन, भोपाल : 1979
08) स्मृतिपुंज – तिरूपति प्रकाशन, हापुड़ : 1983
09) विश्वबोध – श्री शारदा साहित्य सदन, रायगढ़ : 1984

10) छत्तीसगढ़ी मेघदूत – (अनूदित काव्य) – छत्तीसगढ़ लेखक संघ, रायगढ़ : 1984
11) हिंदी में छायावाद – तिरूपति प्रकाशन, हापुड़ : 1984

पण्डित मुकुटधर पाण्डेय जी से संबंधित अनेक संपादित पुस्तकों में प्रमुख है –

01) मुकुटधर पाण्डेय : व्यक्ति एवं रचना – डॉ. महावीर अग्रवाल, श्री प्रकाशन, दुर्ग (छ.ग.) : 2001
02) पण्डित मुकुटधर पाण्डेय चयनिका – छत्तीसगढ़ राज्य हिंदी ग्रंथ अकादमी, रायपुर : 2007

पण्डित मुकुटधर पाण्डेय जी के काव्य सरल और सहज है। उनमें अंतः सौंदर्य और आध्यात्मिक भावनाओं की प्रमुखता है जो छायावादी काव्य की प्रमुख विशेषता है। उनके पास एक सरल अनुभूति जिज्ञासायें हैं, शब्दों का आडम्बर नहीं है। कबीरदास की भांति वे लिखते है –

यह दुनिया बाजार रूप है,
लोग बाजारी है भाई।
काम, क्रोध, मद, लोभ जनाते है
वस्तु यहाँ बिकने आई।

कवि को ईश्वरीय सत्ता का आभास पतितों के दुख में दीन–हीन के अश्रु नीर में, कृषक के हल में और कवि के काव्य में मिलता है –

"दीन हीन के अश्रु नीर में
पतितों के परिताप पीर में
सरल स्वभाव कृषक के हल में
पतिव्रता रमणी के बल में
श्रम सीकर से सिंचित धन में
तेरा मिला प्रमाण।"

– विश्वबोध

छत्तीसगढ़ की मिट्टी से उन्हें विशेष अनुराग था। यहाँ की प्राकृतिक सौंदर्य नदी–पहाड़, पशु, पक्षी से लगाव था। महानदी कविता की पंक्तियाँ प्रस्तुत हैं –

"कितना सुन्दर और मनोहर महानदी यह तेरा रूप
कलकल मय निर्मल, जलधारा, लहरों की है छटा अनूप
तुझे देखकर शैशव की स्मृतियाँ उर में उठती जाग
लेता है कैशोर काल का अँगड़ाई अल्हड़ अनुराग।"

–महानदी

पाण्डेय जी के काव्य संग्रह पूजाफूल में महानदी ग्राम गुणगान, फूल, गुलाब, प्रभात, संध्या षट्ऋतुओं का वर्णन आदि प्रकृति परक कविताएँ हैं। प्रकृति के प्रति कवि की गहरी आत्मीयता है –

"हरित पल्लवित नववृक्षों के दृश्य मनोहर।
होते मुझको विश्व बीच है जैसे सुखकर।
सुखकर वैसे अन्य दृश्य होते न कभी हैं।
उनके आगे तुच्छ परम वे मुझे सभी हैं।।"

– मेरा प्रकृति प्रेम

ग्राम्य जीवन का वर्णन करते हुए कवि ने प्रायः पनघट और पनिहारिनों का वर्णन किया है। इस प्रसंग में पाण्डेय जी ने सहज भावों को ही अभिव्यक्ति दी है :

"पनिहारिन पानी लेने को,
पंक्ति बाँध कर जाती है।
सिर पर नीर पूर्ण मिट्टी के,
कलसे ले–ले आती हैं।।"

रात्रि के समय कुररी के करूण विलाप को सुनकर पाण्डेय जी का ह्रदय करूणा से भर उठा। मन ही मन 'कुररी के प्रति' काव्य की रचना कर डाली। 'कुररी के प्रति' हिंदी काव्य साहित्य की एक ऐसी अमर रचना है जिसने युग निर्माण का कार्य किया है। पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी ने 'कुररी के प्रति' रचना को प्रथम छायावादी काव्य माना है। पंक्ति प्रस्तुत है –

"बता मुझे ऐ विहग विदेशी अपने जी की बात
पिछड़ा था तू कहां, आ रहा जो कर इतनी रात।"

– कुररी के प्रति

गद्य और पद्य दोनों में पाण्डेय जी का समान अधिकार है। हिंदी के अतिरिक्त संस्कृत, उड़िया, बंगला और अंग्रेजी भाषा का भी ज्ञान था। उनकी प्रकाशित गद्य है – 'पूजाफूल', 'शैलबाला', 'मामा', 'लच्छमा', 'परिश्रम' और 'ह्रदयदान' है। उन्होंने महाकवि कालिदास की कालजयी कृति 'मेघदूतम्' का छत्तीसगढ़ी में भावपूर्ण अनुवाद किया। जो छत्तीसगढ़ी भाषा के संवर्धन और विकास में मील के पत्थर सिद्ध होते हैं। कथा के प्रारंभ में कहा गया है –

"यक्ष एक हर अपन काम मा
गलती कछु कर डारिस
तब कुबेर हर शाप छोड़ अलका ले
ओला निकारिस।"

–मेघदूत (छत्तीसगढ़ी)

पण्डित मुकुटधर पाण्डेय काव्य चर्चा के दौरान कालिदास, भवभूति, तुलसीदास, कबीर, मीरा, सूरदास, शेली, मेंटरलिंक, रवीन्द्रनाथ ठाकुर, माइकेल मधुसूदन दत्त, फकीर मोहन सेनापति, मिर्जा गालिब के जीवन से लेकर उनके साहित्य की चर्चा करते थे। अपने समकालीन कवियों में मैथिलीशरण गुप्त और प्रसादजी की चर्चा करते थे। महाकवि कालिदास और तुलसीदास उनके सबसे प्रिय कवि हैं। 'अभिज्ञान शाकुन्तलम्' और 'विनय पत्रिका' उनके सर्वाधिक प्रिय ग्रंथों में से हैं। पाण्डेय जी महात्मा गाँधी जी के विचारों से प्रभावित थे। गाँधी पर वे लिखते हैं –

"तुम शुद्ध बुद्ध की परम्परा में आये
मानव थे ऐसे, देख की देव लजाये
भारत के ही क्यों, अखिल लोक के भ्राता
तुम आये बन दलितों के भाग्य विधाता।"

– गांधी के प्रति

इस प्रकार पाण्डेय जी के साहित्य में भाषा को अपनी संस्कृति और संवेदनात्मक ऊर्जा के अमूर्त संसार को व्यक्त करने की बिम्बात्मक रचना, भावात्मक तथ्यों को अभिव्यक्त करने वाल सांकेतिकता, संवेदना की तीव्रता को प्रेषित करने वाली प्रतीकात्मकता उसने प्रदान की है। भाषा के प्रति परंपरागत वस्तु दृष्टि के बंधनों को तोड़कर उसने अपनी भाव दृष्टि से वस्तु को नए रूप में प्रस्तुत किया। शब्दों का अर्थ, भावबोध और संवेदना के नवीन संस्कारों के अनुरूप ढालने की एकाग्र कोशिश पण्डित मुकुटधर पाण्डेय ने किया। इसके लिए हिंदी साहित्य जगत में वे सदैव प्रासंगिक रहेंगे। अपने देशकाल के परिवर्तित जीवन संदर्भों, आशा, आकांक्षाओं और यथार्थ के बदलते सरगम के अनुरूप एक नयी सामाजिक और विश्व दृष्टि से विकसित करने की भरसक कोशिश की है।

व्यक्ति स्वातंत्र्य और रूढ़ियों से विद्रोह की भावना ने पाण्डेय जी को अपना एक निजी और वैयक्तिक मुहावरा तलाश करने के लिए प्रेरित किया था, वह अपनी रणनीति में नितांत व्यक्तिगत, व्यक्तिनिष्ठ और व्यक्तिवादी होता गया। पाण्डेय जी के साहित्य आधुनिकता के सारे प्रतिमानों पर खरी उतरती है और वह पूर्ण रूप से आधुनिक है। इसलिए यह सदैव प्रासंगिक रहेगी। नामवर सिंह जी का छायावाद के परिप्रेक्ष्य

में कथन है –"छायावाद उस राष्ट्रीय जागरण की काव्यात्मक अभिव्यक्ति है जो एक ओर पुरानी रूढ़ियों से मुक्ति चाहता है और दूसरी ओर विदेशी पराधीनता से।"[11] नामवर सिंह ने मुक्ति को केन्द्र में रखा और स्वाधीनता की बात कही। रूढ़ियाँ समाज को कमजोर बना रही थी विदेशी पराधीनता अर्थात् अंग्रेजों की गुलामी से मुक्ति। इन सामयिक तथ्यों के माध्यम से वे 'छायावाद' को युग संदर्भ से जोड़ते हैं।

पाण्डेय जी के काव्य में प्रकृति के माध्यम से मानव की स्वतंत्रता की ओर संकेत करते हैं क्योंकि प्रकृति के सारे उपादान पर्वत, नदी, झरने, पेड़–पौधे, चिड़ियाँ, सूर्य का प्रकाश, जल, वायु आदि स्वतंत्र हैं, इन्हें कोई गुलाम नहीं बना सकता है।

'हिंदी में छायावाद' और 'कुररी' जैसी अमर ऐतिहासिक रचना का सृजन कर 6 नवम्बर 1989 ई. को पंचतत्व में विलीन हो गये। जीवन के अंतिम क्षण के संबंध में पाण्डेय जी की निम्न पंक्तियाँ उल्लेखनीय है–

"जीवन की संध्या में अब तो है केवल इतना मन–काम
अपनी ममतामयी गोद में, दे मुझको अंतिम विश्राम ।।
चित्रोत्पले, बता तू मुझको वह दिन सचमुच कितना दूर ।
प्राण प्रतीक्षारत् लूटेंगे, मृत्यु पर्व का सुख भरपूर ।।"

महानदी–1

खड़ी बोली हिंदी के विकास, उत्कर्ष में छायावाद और पण्डित मुकुटधर पाण्डेय के साहित्य की प्रासंगिकता सदैव बनी रहेगी।

संदर्भ ग्रंथ सूची –

1. पण्डित मुकुटधर पाण्डेय चयनिका, (प्रस्तावना से) प्रो. दिनेश पाण्डेय डॉ. बिहारी लाल साहू ।
2. साहित्यान्वेषण, विनय मोहन शर्मा; पृ. क्र. 14–15 ।
3. छायावाद और मुकुटधर पाण्डेय, सं डॉ. बलदेव साव; पृ. क्र. 136 ।
4. पण्डित मु. पा. चयनिका, (प्रस्तावना से) सं. प्रो. दिनेश पाण्डेय डॉ. बिहारी लाल साहू ।
5. छायावाद और मुकुटधर पाण्डेय, संपादक डॉ. बलदेव साव; पृ. क्र. 138 ।
6. पण्डित मु. पा. चयनिका, संपादक प्रो. दिनेश पाण्डेय डॉ. बिहारी लाल साहू; पृ. क्र. 139 ।
7. पण्डित मु. पा. चयनिका, संपादक प्रो. दिनेश पाण्डेय डॉ. बिहारी लाल साहू; पृ. क्र. 151 ।
8. मुकुटधर पाण्डेय व्यक्ति एवं रचना, संपादक महावीर अग्रवाल (विनय पाठक आलेख); पृ क्र. 93 ।
9. मुकुटधर पाण्डेय व्यक्ति एवं रचना, संपादक महावीर अग्रवाल (विनय पाठक आलेख); पृ क्र. 95 ।
10. मुकुटधर पाण्डेय व्यक्ति एवं रचना, संपादक महावीर अग्रवाल; पृ. क्र. 75 ।
11. मुकुटधर पाण्डेय व्यक्ति एवं रचना, (छायावाद लेख नामवर सिंह); पृ. क्र. 177 ।

Sahitya Samhita (साहित्य संहिता)
(Peer Reviewed Hindi Journal)

ISSN 2454-2695
Vol 8 Issue 01
January 2022

छायावाद और पण्डित मुकुटधर पाण्डेय के साहित्य की उपयोगिता

शोध निर्देशक
डॉ. जयपाल सिंह प्रजापति
विभागाध्यक्ष–हिंदी विभाग
पण्डित सुन्दरलाल शर्मा (मुक्त)
विश्वविद्यालय छत्तीसगढ़, बिलासपुर

शोधार्थी एवं प्रस्तुतकर्ता
बीरू लाल बरगाह
सहायक प्राध्यापक हिंदी
राजीव गांधी शास. महाविद्यालय
सिमगा, जिला बलौदाबाजार (छ.ग)
birulalbargah@gmail.com

पण्डित मुकुटधर पाण्डेय और छायावादी काव्य की सबसे महत्वपूर्ण उपलब्धि यह है कि उन्होंने खडी बोली हिंदी को आधुनिक भावबोध से युक्त रचनात्मक और समृध्दशाली काव्यभाषा बनाने की पहल की। साहित्य के क्षेत्र में प्रायः यह देखा गया है कि पूर्ववर्ती युग के अभावों को पूर्ण करने के लिए परवर्ती युग का जन्म होता है। 'छायावाद' के मूल में भी यही सिध्दान्त काम कर रहा है, क्योंकि द्विवेदी युगीन कविताएँ कोरी उपदेश मात्र रह गई। उसमे समाज सुधार की चर्चा व्यापक रूप से की जाती है, कुछ आख्यानो का ही विवरण मिलता है, इतिवृत्तात्मक, उपदेशात्मकता और नैतिकता की प्रधानता के कारण कविता में निरसता आ गई, कवियों का हृदय उस नीरसता से ऊब गया और कविता में सरसता लाने के लिए छटपटा उठे। इसके लिए छायावादी कवियों में काव्य 'वह' के स्थान पर 'मैं' शैली अपनायी। छायावादी कवियों ने काव्य की विषय वस्तु अपने जीवन से ही खोजने का प्रयास किया। अपने जीवन के निजी प्रसंगों, घटनाओं एवं व्यक्तिगत भावनाओं को अनेक छायावादी कवियों ने काव्य–वस्तु बनाया। मुकुटधर पाण्डेय जी की सूक्ष्म दृष्टि ने छायावाद की मूल भावना आत्मनिष्ठ अन्तर्दृष्टि को पहचान लिया। इस नीरसता से मुक्ति पाने के उन्होंने वैयक्तिक सुख–दुख, स्वयं की अनुभूति और प्रकृति को माध्यम बनाया।

बीसवी शताब्दी की महान विभूतियों में से एक पद्मश्री साहित्य वाचस्पति पण्डित मुकुटधर पाण्डेय जी संक्रमण काल के सर्वाधिक सामर्थ्यवान कवियों में अग्रगण्य हैं। द्विवेदीयुग और छायावादी युग के बीच की एक महत्वपूर्ण कडी पाण्डेय जी की काव्य यात्रा को समझे बिना खडी बोली हिंदी के विकास को सही ढंग से नहीं समझ सकते हैं। डॉ. बलदेव जी कहते हैं "पाण्डेय जी ने द्विवेदीयुग के शुष्क उद्यान मे नूतन सूर भरा तथा नववंसत की अगुवानी कर युग प्रवर्तन का ऐतिहासिक कार्य किया।"[1] पाण्डेय जी के काव्य मे द्विवेदी एवं छायावादी युगीन काव्य की सभी विशेषताएँ परिलक्षित होती है। एक ओर उनके काव्य में द्विवेदी युग के महान आदर्श जिसमें लोकहित प्रमुखता से अभिव्यक्त होता है, तो वहीं दूसरी ओर आंतरिक सुन्दरता, सूक्ष्म चित्रण, किसी वस्तु या प्रकृति का असाधारण चित्र आदि छायावादी विशेषताएँ दृष्टव्य होती हैं। इस प्रकार हम देखते हैं कि पाण्डेय जी के काव्य लेखन में स्वच्छंदतावाद और आदर्शवाद जैसी दो विरोधी प्रवृत्तियाँ देखने को मिलती है। पाण्डेय जी सर्वप्रथम काव्य की उन्मुख हुए, उसके पश्चात् वे विचारक, साहित्य समीक्षक, अनुवादक और गद्य साहित्य लेखक के रूप मे प्रसिद्ध हुए। उनकी 'कुररी के प्रति' रचना को पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी जी ने प्रथम छायावादी कविता के रूप मे स्वीकार किया।

छायावाद कहते ही एक ऐसे समय का बोध होता है कि उस समय के केन्द्र मे छाया हो। छायावाद का समय 1918–1936 ई. तक मानी जाती है। उस समय जो काव्यांदोलन चला उसे हिंदी में छायावाद कहते है।

Sahitya Samhita (साहित्य संहिता)
(Peer Reviewed Hindi Journal)

ISSN 2454-2695
Vol 8 Issue 01
January 2022

हिंदी साहित्य का स्वर्णयुग भक्तिकाल को माना जाता है और आधुनिक हिंदी (खडी बोली) का स्वर्णयुग 'छायावाद' को माना जाता है। पण्डित मुकुटधर पाण्डेय ही 'छायावाद' के प्रवर्तक है।

पण्डित मुकुटधर पाण्डेय जी का जन्म 30 सितम्बर सन् 1895 ई. को बिलासपुर जिला वर्तमान में जांजगीर–चांपा जिले के बालपुर नामक ग्राम में हुआ था । महानदी के तट प्रदेश मे बसा यह गॉव रायगढ सारंगढ मार्ग पर चन्द्रपुर के पूर्व दिशा मे स्थित है । महानदी के पुल से देखने पर घनी अमराइयों से झाँकता हुआ बालपुर गाँव मानो प्रकृति की गोद मे बैठा हुआ सा प्रतीत होता है । महानदी की सुन्दरता पर मुग्ध होकर पाण्डेय जी लिखते हैं –

"कितना सुन्दर और मनोहर, महानदी यह तेरा रूप ।
कलकल मय निर्मल जलधारा; लहरों की है छटा अनूप ।।"

महानदी–1

पण्डित मुकुटधर पाण्डेय ने सन 1920 ई. में जबलपुर मध्यप्रदेश से निकलने वाली पत्रिका 'श्रीशारदा' में 'हिंदी में छायावाद शीर्षक' से चार निबंधों की एक लेखमाला छपवाई। इन चारों निबंधो मे पाच बातों की ओर ध्यान इंगित किया है जिसमें वैयक्तिकता, स्वातंत्र्य बोध, रहस्यवादिता, शैलीगत वैशिष्ट्य और अस्पष्टता।

'छायावाद' का नामकरण पण्डित मुकुटधर पाण्डेय जी ने किया है। डॉ. विनय मोहन शर्मा को एक पत्र में लिखा है – "छायावाद नाम सर्वथा मेरा गढा हुआ है और मैंने परोक्ष सत्ता के प्रति अस्पष्ट रूप से व्यक्त भावों की रचना के लिए इसे प्रयुक्त किया था।"[2] 'कुररी के प्रति' रचना के बारे में उनका कहना है – "रात्रि मे कुररी के करूण स्वर सुनकर बिस्तर पर पडे पडे मैंने मन में ही कुररी के प्रति की रचना कर डाली; तब मुझे आश्चर्य हुआ कि छायावाद लिखा नहीं जाता, अनुभूति द्वारा अपने आप ही लिख जाता है।"

श्रीशारदा 1920 में दूसरा लेख है 'छायावाद क्या है ? प्रारंभिक पंक्तियाँ हैं" हिंदी में यह बिल्कुल नया शब्द है। अंग्रेजी या पाश्चात्य साहित्य अथवा बंग साहित्य की वर्तमान स्थिति की कुछ भी जानकारी रखने वाले समझ जाएँगे कि यह शब्द Mysticism के लिए आया है।"[3]

यूरोपीय पुनर्जागरण की शुरूआत इटली में हुई है। इसी प्रकार भारतीय पुनर्जागरण की शुरूआत बंगाल में। बंगाल में ईसाई संतों द्वारा ईश्वर की प्रार्थना करते समय उन्हें अपने ऊपर ईश्वर की छाया का आभास होता था जिसे फैन्टेसमाटा (fantasmata) कहते हैं। इस तरह की आध्यात्मिक छाया का भान अनुभूति रवीन्द्रनाथ टैगोर की कविताओं में दिखाई पडती है । रवीन्द्रनाथ टैगोर को उनकी कृति 'गीतांजलि' के लिए सन् 1913 ई. मे साहित्य का प्रथम नोबल पुरूस्कार मिला और हिंदी के कवियों ने रवीन्द्रनाथ टैगोर की कविताओं का अनुकरण किया। तत्पश्चात् 'छायावाद' नाम से आंदोलन चल पड़ा।

छायावाद विषयक लेखमाला से पहले मार्च 1920 ई. हितकारिणी पत्रिका में छायावाद की संक्षिप्त परिभाषा 'चरणप्रसाद' नामक कविता में दी है –

"भाषा क्या वह छायावाद
है न कहीं उसका अनुवाद"[4]

ISSN 2454-2695
Vol 8 Issue 01
January 2022

छायावाद शब्द का प्रथम प्रयोग सन् 1920 ई. के आसपास "द्विवेदी युग के वयोवृद्ध साहित्यकारों और आलोचको ने निंदा या घृणा के भाव से नहीं 24–25 वर्ष के एक अधकचरे नवयुवक ने सद्भावना पूर्वक किया था।"[5] ये नवयुवक और कोई नहीं स्वयं मुकुटधर पाण्डेय जी थे।

पण्डित मुकुटधर पाण्डेय और छायावादी काव्य की सबसे बड़ी उपलब्धि यह है कि उसने खड़ी बोली हिंदी को आधुनिक भावबोध से युक्त रचनात्मक और समृद्धशाली काव्यभाषा बनाने की पहल की। 'हिंदी में छायावाद' निबंध के प्रथम निबंध 'कवि स्वातंत्र्य' मे पाण्डेय जी ने रीति ग्रंथों की परतंत्रता से मुक्त होकर काव्य में व्यक्तित्व तथा भाव, छन्द, भाषा के प्रकाशन रीति में मौलिकता की आवश्यकता पर जोर दिया है।

"छायावाद एक ऐसी मायामय सूक्ष्म वस्तु है कि शब्दों द्वारा उसका ठीक–ठीक वर्णन करना असंभव है। शब्द अपने स्वाभाविक मूल्य खोकर सांकेतिक चिन्ह मात्र हुआ करते हैं।"[6]

छायावाद के कवि वस्तुओं को असाधारण दृष्टि से देखते है। उनकी रचना की सम्पूर्ण विशेषताएँ उनकी इस दृष्टि पर आधारित रहती है, वह क्षणभर में वस्तुओं को बिजली की तरह स्पर्श करती हुई निकल जाती है। अस्थिरता और क्षीणता के साथ उसमें एक तरह की विचित्र उन्मादकता और अंतरंगता होती हैं जिसके कारण वस्तु उसके प्राकृतिक रूप से भिन्न रूप में दिखाई पड़ती है। यह अंतरंग दृष्टि ही छायावाद की विचित्र प्रकाशन रीति का मूल है। उसमें किसी वस्तु या दृश्य का ज्यों का त्यों चित्र लिया जाता है पर शब्द ऐसे वेगयुक्त होते हैं कि भाषा उडती हुई जान पडती है। ऐसी रचनाओं मे शब्द अपने वास्तविक मूल्य खोकर सांकेतिक चिहन मात्र होते हैं।

इस प्रकार मुकुटधर पाण्डेय जी की सूक्ष्म दृष्टि ने छायावाद के मूलभावना आत्मनिष्ठ अन्तर्दृष्टि को पहचान लिया था। निबंध 'हिंदी में छायावाद' इस निबंध के माध्यम से छायावाद पर लगाये गये अस्पष्टता आदि आरोपों का खण्डन करते हुए लिखते हैं – "छायावाद की आवश्यकता हम इसलिए समझते हैं कि उससे कवियों को भाव प्रकाशन का एक नया मार्ग मिलेगा। इस प्रकार के अनेक मार्गो अनेक रीतियों का होना ही उन्नत साहित्य का लक्षण है।"[7]

मुकुटधर पाण्डेय की रचनाओं में मन के बंधन की पीड़ा की अभिव्यक्ति है जो स्वतंत्रता प्राप्ति के लिए छटपटा रही है। काव्य स्वातंत्र्य में पाण्डेय जी के शब्द हैं संसार में प्रत्येक मनुष्य स्वतंत्रता चाहता है, फिर भी उसे मानसिक भूमि में परतंत्र रहना क्यों पसंद होगा यह बात समझ मे नहीं आती।

डॉ. नामवर सिंह का कथन है – "छायावाद का ऐतिहासिक एवं तात्विक विवेचन छायावाद पर पहला निबंध होने के साथ ही एक अत्यन्त सूझबूझ प्रभावशाली समीक्षा भी है। इस निबंध का महत्व ऐतिहासिक ही नहीं, स्थायी भी है।"[8] पाण्डेय जी ने भावों की छाया या अस्पष्ट–अप्रत्यक्ष स्वरूप के लिए सांकेतिक अभिव्यक्ति हेतु छायावाद नाम सुझाया। वे छायावाद की क्लिष्टता को सरल बनाकर जन सामान्य में लोकप्रिय बनाने के पक्षपाती रहे। पाण्डेय जी के 'कविता' शीर्षक निबंध काव्यादर्श और छायावाद के पर्याय को प्रमाणित करते हैं। वे काव्य में लोकगीतों की सरसता व श्रम–शक्ति का समावेश करना चाहते थे। उनका ध्यान गाँव मे काम करने वाले गरीब किसानों, मजदूरों की ओर गया। उन्होंने श्रम की महिमा गाई –

"धन्य तुम ग्रामीण किसान
सरलता, प्रिय औदार्य निधान

ISSN 2454-2695
Vol 8 Issue 01
January 2022

छोड़ जन संकुल नगर निवास
किया क्यो विजन ग्राम मे गेह
नहीं प्रासादो की कुछ चाह
कुटीरों से क्यों इतना नेह।"

–किसान

पाण्डेय जी काव्यकला को स्पष्ट करते हुए कहते हैं कि – हृदयग्राही भाषा चित्र का नाम ही काव्य है, कविता प्रभावोत्पादक और मनोरंजक होती है। सौदर्य वर्णन के सिवाय कविता मे कुछ ऐसी विशेषता होनी चाहिए कि उसके पाठ से सर्वत्र ईश्वरीय भाव अथवा एक अदृश्य शक्ति या किसी अखण्ड नियम की व्यापकता या प्रधानता हो। साथ ही वे कहते है कि मानव जीवन का प्रवाह जब आध्यात्मिक भावों के समुद्र में जाकर लीन हो जाता है, तब वह अपने अंतिम लक्ष्य पर पहुँच जाता है।

प्रथम विश्वयुद्ध के पश्चात् भारतीय जनता निराशा के सागर में डूब रही थी। ब्रिटिश सत्ता के अत्याचार के कारण कवियों में असंतोष और विद्रोह के भाव थे, वे इसे व्यक्त करने में असमर्थ रहे। इस संक्रमण काल में कविता शीर्षक निबंध के अंतर्गत पाण्डेय जी ने नवयुवक कवियों को प्रोत्साहित करते हुए लिखा है – "हमारे कवि और लेखक इस ओर सचेष्ट है और वे देश की आवश्यकता को समझकर जन जागरण, एकता वीरता और स्वतंत्रता आदि के भाव बराबर फैला रहे हैं। यह बहुत ही शुभ लक्षण हैं और शीघ्र ही अभीष्ट फल की प्राप्ति होगी।"[9]

देश की दुर्दशा पर चिंता व्यक्त करते हुए कवि आर्य सन्तानों को जागृत करने का संकल्प लेते हैं। उठो चेतो की यह पक्तियाँ उल्लेखनीय हैं :

"उठो हे आर्य सन्तानों, सबेरा हो चुका प्यारे।
समय यह है न सोने का तजो आलस्य को भाई।
लगो कर्तव्य में अपने भगे दारिद्रय दुःखदाई।
उदय हो सौख्य सूरज का गगन में लालिमा छाई।"

–उठो चेतो

पण्डित मुकुटधर पाण्डेय की रचनाओं में साहित्य मनीषियों ने छायावाद की झलक देखी और सराहा। पाण्डेय जी ने श्री शारदा पत्रिका में विस्तार से प्रकाश डाला जो उनके चिंतन और अध्ययन की अमूल्य निधि है। छायावाद के प्रवर्तक कवि उन्हें माना जाता है पर वे विनम्रतापूर्वक कहते हैं कि "मेरी रचनाओं में चाहे लोग जो भी खोज ले परन्तु ये विशुद्ध रूप से मेरी रचनाओं पर आंतरिक सहमज अभिव्यक्ति मात्र है। उनमें न तो कल्पना की ऊँची उड़ान है न विचारों की उलझन, न भावों की दुरूहता। उनमें उर्दू की चीजों की चुलबुलाहट या बांकपन भी नहीं। वह सरल सहज उद्‌गार मात्र है।"[10]

पण्डित मुकुटधर पाण्डेय ने 'हिंदी में छायावाद' नामक निबंध के माध्यम से 'छायावाद' का प्रवर्तन किया। पाण्डेय जी का पदय और गदय दोनों में समान अधिकार है। उनकी रचनाओं की सूची प्रस्तुत है –

01) पूजाफूल (काव्य संग्रह) – ब्रह्म प्रेस, इटावा : 1916
(02) शैलबाला (अनूदित उपन्यास) – हरिदास एंड कंपनी कलकत्ता, 1916
03) परिश्रम (निबंध संग्रह) – हरिदास एउ कंपनी कलकत्ता : 1917

ISSN 2454-2695
Vol 8 Issue 01
January 2022

04) लच्छमा (अनूदित उपन्यास) – हरिदास एंड कंपनी कलकत्ता : 1917

05) हृदयदान (कहानी संग्रह) – गल्पमाला, बनारस : 1918

06) मामा (अनूदित उपन्यास) – रिखबदास वाहिनी एंड कपनी, उड़ीसा : 1924

07) छायावाद एवं अन्य निबंध – म.प्र साहित्य सम्मेलन, भोपाल : 1979

08) स्मृतिपुंज – तिरूपति प्रकाशन, हापुड़ : 1983

09) विश्वबोध – श्री शारदा साहित्य सदन, रायगढ : 1984

10) छत्तीसगढी मेघदूत – (अनूदित काव्य) – छत्तीसगढ लेखक संघ, रायगढ : 1984

11) हिंदी में छायावाद -- तिरूपति प्रकाशन, हापुड : 1984

पण्डित मुकुटधर पाण्डेय जी से संबंधित अनेक संपादित पुस्तकों मे प्रमुख हैं –

01) मुकुटधर पाण्डेय : व्यक्ति एवं रचना – सं. महावीर अग्रवाल, श्री प्रकाशन, दुर्ग (छ.ग.) : 2001

02) पण्डित मुकुटधर पाण्डेय चयनिका – छत्तीसगढ राज्य हिंदी ग्रथ अकादमी, रायपुर : 2007

पण्डित मुकुटधर पाण्डेय जी के काव्य सरल और सहज हैं। उनमें अंतः सौंदर्य और आध्यात्मिक भावनाओं की प्रमुखता है जो छायावादी काव्य की प्रमुख विशेषता है। उनके पास एक सरल अनुभूति जिज्ञासायें हैं, शब्दों का आडम्बर नहीं है। कबीरदास की भांति वे लिखते हैं –

यह दुनिया बाजार रूप है,
लोग बाजारी हैं भाई।
काम, क्रोध, मद, लोभ जनति है
वस्तु यहाँ बिकने आई।

कवि को ईश्वरीय सत्ता का आभास पतितों के दुख में दीन–हीन के अश्रु नीर मे, कृषक के हल में और कवि के काव्य में मिलता है –

"दीन हीन के अश्रु नीर में
पतितों के परिताप पीर में
सरल स्वभाव कृषक के हल में
पतिव्रता रमणी के बल में
श्रम सीकर से सिंचित धन में
तेरा मिला प्रमाण।"

– विश्वबोध

छत्तीसगढ की मिट्टी से उन्हें विशेष अनुराग था। यहाँ की प्राकृतिक सौंदर्य नदी–पहाड़, पशु, पक्षी से लगाव था। महानदी कविता की पंक्तियाँ प्रस्तुत है –

"कितना सुन्दर और मनोहर महानदी यह तेरा रूप
कलकल मय निर्मल, जलधारा, लहरों की है छटा अनूप
तुझे देखकर शैशव की स्मृतियाँ उर में उठती जाग
लेता है कैशोर काल का अँगड़ाई अल्हड़ अनुराग।"

–महानदी

Sahitya Samhita (साहित्य संहिता)
(Peer Reviewed Hindi Journal)

ISSN 2454-2695
Vol 8 Issue 01
January 2022

पाण्डेय जी के काव्य संग्रह पूजाफूल में महानदी ग्राम गुणगान, फूल, गुलाब, प्रभात, संध्या षटऋतुओं का वर्णन आदि प्रकृति परक कविताएँ है। प्रकृति के प्रति कवि की गहरी आत्मीयता है –

"हरित पल्लवित नववृक्षों के दृश्य मनोहर।
होते मुझको विश्व बीच है जैसे सुखकर।
सुखकर वैसे अन्य दृश्य होते न कभी हैं।
उनके आगे तुच्छ परम वे मुझे सभी हैं।।"

– मेरा प्रकृति प्रेम

ग्राम्य जीवन का वर्णन करते हुए कवि ने प्रायः पनघट और पनिहारिनो का वर्णन किया है। इन प्रसंग मे पाण्डेय जी ने सहज भावों को ही अभिव्यक्ति दी है :

"पनिहारिन पानी लेने को,
पंक्ति बाँध कर जाती हैं।
सिर पर नीर पूर्ण मिट्टी के,
कलसे ले–ले आती है।।"

रात्रि के समय कुररी के करूण विलाप को सुनकर पाण्डेय जी का हृदय करूणा से भर उठा। मन ही मन 'कुररी के प्रति' काव्य की रचना कर डाली। 'कुररी के प्रति' हिंदी काव्य साहित्य की एक ऐसी अमर रचना है जिसने युग निर्माण का कार्य किया है। पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी ने 'कुररी के प्रति' रचना को प्रथम छायावादी काव्य माना है। पंक्ति प्रस्तुत है –

"बता मुझे ऐ विहग विदेशी अपने जी की बात
पिछड़ा था तू कहां, आ रहा जो कर इतनी रात।"

– कुररी के प्रति

गद्य और पद्य दोनों में पाण्डेय जी का समान अधिकार है। हिंदी के अतिरिक्त संस्कृत, उड़िया, बंगला और अंग्रेजी भाषा का भी ज्ञान था। उनकी प्रकाशित गद्य है – 'पूजाफूल', 'शैलबाला', 'मामा', 'लच्छमा', 'परिश्रम' और 'हृदयदान' है। उन्होंने महाकवि कालिदास की कालजयी कृति 'मेघदूतम्' का छत्तीसगढी में भावपूर्ण अनुवाद किया। जो छत्तीसगढी भाषा के संवर्धन और विकास में मील के पत्थर सिद्ध होते हैं। कथा के प्रारंभ मे कहा गया है –

"यक्ष एक हर अपन काम मा
गलती कछु कर डारिस
तब कुबेर हर शाप छोड़ अलका ले
ओला निकारिस।"

–मेघदूत (छत्तीसगढी)

पण्डित मुकुटधर पाण्डेय काव्य चर्चा के दौरान कालिदास, भवभूति, तुलसीदास, कबीर, मीरा, सूरदास, शेली, मेटरलिंक, रवीन्द्रनाथ ठाकुर, माइकेल मधुसूदन दत्त, फकीर मोहन सेनापति, मिर्जा गालिब के जीवन से लेकर उनके साहित्य की चर्चा करते थे। अपने समकालीन कवियों में मैथिलीशरण गुप्त और प्रसादजी की चर्चा करते थे।

ISSN 2454-2695
Vol 8 Issue 01
January 2022

महाकवि कालिदास और तुलसीदास उनके सबसे प्रिय कवि है। 'अभिज्ञान शाकुन्तलम' और 'विनय पत्रिका' उनके सर्वाधिक प्रिय ग्रंथों में से है। पाण्डेय जी महात्मा गाँधी जी के विचारों से प्रभावित थे। गाँधी पर वे लिखते है –

"तुम शुद्ध बुद्ध की परम्परा में आये
मानव थे ऐसे, देख की देव लजाये
भारत के ही क्यों, अखिल लोक के भ्राता
तुम आये बन दलितों के भाग्य विधाता।"

– गांधी के प्रति

इस प्रकार पाण्डेय जी के साहित्य में भाषा को अपनी संस्कृति और संवेदनात्मक ऊर्जा के अमूर्त संसार को व्यक्त करने की बिम्बात्मक रचना, भावात्मक तथ्यों को अभिव्यक्त करने वाल सांकेतिकता, संवेदना की तीव्रता को प्रेषित करने वाली प्रतीकात्मकता उसने प्रदान की है। भाषा के प्रति परंपरागत वस्तु दृष्टि के बंधनों को तोड़कर उसने अपनी भाव दृष्टि से वस्तु को नए रूप में प्रस्तुत किया। शब्दों का अर्थ, भावबोध और संवेदना के नवीन संस्कारों के अनुरूप ढालने की एकाग्र कोशिश पण्डित मुकुटधर पाण्डेय ने किया। इसके लिए हिंदी साहित्य जगत में वे सदैव प्रासंगिक रहेंगे। अपने देशकाल के परिवर्तित जीवन संदर्भ, आशा, आकांक्षाओं और यथार्थ के बदलते सरगम के अनुरूप एक नयी सामाजिक और विश्व दृष्टि से विकसित करने की भरसक कोशिश की हैं।

व्यक्ति स्वातंत्र्य और रूढियों से विद्रोह की भावना ने पाण्डेय जी को अपना एक निजी और वैयक्तिक मुहावरा तलाश करने के लिए प्ररित किया था, वह अपनी रणनीति में नितांत व्यक्तिगत, व्यक्तिनिष्ठ और व्यक्तिवादी होता गया। पाण्डेय जी के साहित्य आधुनिकता के सारे प्रतिमानों पर खरी उतरती है और वह पूर्ण रूप से आधुनिक है। इसलिए वह सदैव प्रासंगिक रहेगी। नामवर सिंह जी का छायावाद के परिप्रेक्ष्य में कथन है –"छायावाद उस राष्ट्रीय जागरण की काव्यात्मक अभिव्यक्ति है जो एक ओर पुरानी रूढियों से मुक्ति चाहता है और दूसरी ओर विदेशी पराधीनता से;"[11] नामवर सिंह ने मुक्ति को केन्द्र में रखा और स्वाधीनता की बात कही। रूढियाँ समाज को कमजोर बना रही थी विदेशी पराधीनता अर्थात् अंग्रेजों की गुलामी से मुक्ति। इन सामयिक तथ्यों के माध्यम से वे 'छायावाद' को युग संदर्भ से जोड़ते हैं।

पाण्डेय जी के काव्य में प्रकृति के माध्यम से मानव की स्वतंत्रता की ओर संकेत करते हैं क्योंकि प्रकृति के सारे उपादान पर्वत, नदी, झरने, पेड़–पौधे, चिड़ियाँ, सूर्य का प्रकाश, जल, वायु आदि स्वतंत्र हैं, इन्हें कोई गुलाम नहीं बना सकता है।

'हिंदी में छायावाद' और 'कुररी' जैसी अमर ऐतिहासिक रचना का सृजन कर 6 नवम्बर 1989 ई. को पंचतत्व में विलीन हो गये। जीवन के अंतिम क्षण के संबंध में पाण्डेय जी की निम्न पंक्तियाँ उल्लेखनीय हैं–

"जीवन की संध्या में अब तो है केवल इतना मन–काम
अपनी ममतामयी गोद में, दे मुझको अंतिम विश्राम ।।
चित्रोत्पले, बता तू मुझको वह दिन सचमुच कितना दूर ।
प्राण प्रतीक्षारत् लूटेंगे, मृत्यु पर्व का सुख भरपूर ।।"

महानदी–1

खड़ी बोली हिंदी के विकास, उत्कर्ष में छायावाद और पण्डित मुकुटधर पाण्डेय के साहित्य की प्रासंगिकता सदैव बनी रहेगी।

ISSN 2454-2695
Vol 8 Issue 01
January 2022

संदर्भ ग्रंथ सूची –

1. पण्डित मुकुटधर पाण्डेय चयनिका, (प्रस्तावना से) प्रो. दिनेश पाण्डेय डॉ. बिहारी लाल साहू ।
2 साहित्यान्वेषण, विनय मोहन शर्मा; पृ. क्र. 14–16 ।
3 छायावाद और मुकुटधर पाण्डेय, सं डॉ. बलदेव साव, पृ. क्र. 136 ।
4. पण्डित मु. पा. चयनिका, (प्रस्तावना से) स. प्रो. दिनेश पाण्डेय डॉ. बिहारी लाल साहू ।
5. छायावाद और मुकुटधर पाण्डेय, संपादक डॉ. बलदेव साव; पृ. क्र. 138 ।
6. पण्डित मु. पा. चयनिका, संपादक प्रो. दिनेश पाण्डेय डॉ. बिहारी लाल साहू, पृ. क्र. 139 ।
7. पण्डित मु. पा. चयनिका, संपादक प्रो. दिनेश पाण्डेय डॉ. बिहारी लाल साहू, पृ. क्र. 151 ।
8. मुकुटधर पाण्डेय व्यक्ति एवं रचना, संपादक महावीर अग्रवाल (विनय पाठक आलेख), पृ क्र. 93 ।
9. मुकुटधर पाण्डेय व्यक्ति एवं रचना, संपादक महावीर अग्रवाल (विनय पाठक आलेख); पृ क्र. 95 ।
10. मुकुटधर पाण्डेय व्यक्ति एवं रचना, संपादक महावीर अग्रवाल; पृ. क्र 75 ।
11. मुकुटधर पाण्डेय व्यक्ति एवं रचना, (छायावाद लेख नामवर सिंह); पृ. क्र 177 ।

(2)

ISSN : 2278-4632

JUNI KHYAT

जूनी ख्यात

IMPACT FACTOR : 6.625

UGC CARE Group I Journal

VOL 10 ISSUE -08 NO.09 August 2020

JUNI KHYAT
जूनी ख्यात

JUNI KHYAT

जूनी ख्यात

(संयुक्तांक)

सपादक

डॉ. बी.एल. भादानी

पूर्व विभागाध्यक्ष

इतिहास विभाग,

अलिगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय, अलीगढ़

प्रबधक सपादक

श्याम महर्षि

मरुभूमि शोध संस्थान

संस्कृति भवन

एन.एच. 11, श्रीडूंगरगढ़ (बीकानेर) राजस्थान

INDEX

S.NO.	TITLE	Page
1	ETHNIC CONFLICTS AND TRAUMA THEORY IN NAYOMI MUNAWEERA'S ISLAND OF THOUSAND MIRRORSS	1
2	दक्षिण एशिया में आतंकवाद एक गंभीर चुनौती	5
3	IMPACT OF FAMILY STRUCTURE AMONG SCHOOL CHILDREN ON EXTRAVERSION	1[illegible]
4	पण्डित मुकुटधर पाण्डेय की कविता और गद्य साहित्य में लोक–चेतना	1[illegible]
5	EMPLOYEE RETENTION IN BIG BAZAAR, KALABURAGI CITY	2[illegible]
6	कोशी क्षेत्र के मंदिरों की सांस्कृतिक भूमिका	28
7	पण्डित मुकुटधर पाण्डेय की कविता और गद्य साहित्य में लोक–चेतना	32
8	संगीत साधना पद्धति व योग में अर्न्तसम्बन्ध	38
9	द ब्यूटीफुल ट्री और पर्यावरणीय स्वच्छता : गाँधी जी के विचार पर एक अध्ययन	43
10	DESIGN DEVELOPMENT AND PHARMACEUTICAL EVALUATION OF FLOATING MICROSPHERES OF PANTOPRAZOLE	48
11	DESIGN AND DEVELOPMENT AND PHARMACEUTICAL EVALUATION OF A FAST MOUTH DISSOLVING FILM AS DRUG DELIVERY SYSTEM	62
12	A REVIEW ON ARSENIC MANAGEMENT	79
13	OVERVIEW ON ADVENTURE SPORTS TOURISM IN INDIA	89
14	A STUDY TO ASSESS THE KNOWLEDGE ON NON-PHARMACOLOGICAL THERAPY AMONG ADULTS WITH LOWBACK PAIN IN SELECTED RURAL AREAS, KARAIKAL	94
15	GROWTH KINETIC STUDY OF GRAM POSITIVE AND GRAM NEGATIVE BACTERIA UNDER SEVERAL BIO-CHEMICAL STRESS CONDITIONS	100
16	WOMAN AS A SYMBOL OF SACRIFICE IN KAMALA MARKANDAYA'S NOVEL NECTAR IN A SIEVE	105
17	महात्मा गाँधी: आदर्श ग्राम स्वराज्य की संकल्पना	108
18	RELIGION, DEVADASI PRACTICE AND DEVADASI CHILDREN- A SOCIOLOGICAL STUDY	111
19	WOMEN CONSTRUCTION WORKERS IN KARNATAKA : A SOCIOLOGICAL STUDY	120
20	REVIEWING LITERATURE OF CROSS BUYING CONSUMER BEHAVIOUR	129
21	अष्टांङ्गहृदयम् के सूत्रस्थान में वर्णित औषधियों का समीक्षात्मक अध्ययन	147
22	वाग्भट रचित अष्टाङ्गहृदयम् के सूत्रस्थान का दार्शनिक–अध्ययन	151
23	आधुनिक परिपे्रक्ष्य में जैन दर्शन की 'समता' की उपयोगिता	158
24	बालश्रम – समाज और सरकार	164
25	A STUDY ON SEISMIC ANALYSIS OF RCC STRUCTURE	169
26	POST-INDEPENDENCE ERA OF WOMEN EMANCIPATION ON INDIAN CINEMA: A VIEW FROM FILM MOTHER INDIA	175
27	WOMEN'S POLITICAL PARTICIPATION IN INDIA	180
28	भारतीय लोक और जनजातीय कलारूः विश्व के लिए एक धरोहर	183

पण्डित मुकुटधर पाण्डेय की कविता और गद्य साहित्य में लोक–चेतना

शोध निर्देशक
डॉ. जयपाल सिंह प्रजापति
विभागाध्यक्ष, हिंदी विभाग
पण्डित सुन्दरलाल शर्मा (मुक्त) वि.वि.
छत्तीसगढ़, बिलासपुर
मो.नं. 9229703055
ईमेल–singh.jaipal82@gmail.com

शोधार्थी
श्री बीरू लाल बरगाह
शोधार्थी, सहा. प्राध्यापक (हिंदी)
राजीव गांधी शास. महाविद्यालय, सिमगा
मो.नं. 9589914278
ईमेल–birulalbargah@gmail.com

शोध सारांश :

पण्डित मुकुटधर पाण्डेय जी प्रकृति प्रेम, मानव प्रेम, देशभक्ति, वैयक्तिक चेतना, लोकहित एवं समाज कल्याण की भावना को ही साहित्य की सार्थकता मानते हैं। पाण्डेय जी का विचार है साहित्य (काव्य / गद्य) ऐसी हो जो जनमानस के सुपुप्त भावों को जागृत कर उन्हें कर्तव्य पथ पर आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करें। उन्होंने अपनी लेखनी से सामाजिक रूढ़ियों, दीन–हीनों, शोषितों, दमित, किसानों और मजदूरों के अनेक जीवन्त चित्र एवं उनके सपने अंकित किए हैं। उनकी कविता संसार वस्तुतः वह लोक सामान्य जीवन हैं जिसे अति सामान्य समझकर अन्य कवि अपनी आँखें बंद कर लेते हैं।

भूमिका :

मुकुटधर पाण्डेय जी लोक साहित्य की चेतना के साथ विशुद्ध हिंदी साहित्य की द्विवेदीयुगीन एवं छायावादी युगीन चेतना को धारण करने वाले साहित्यकार है। पाण्डेय जी के रचनाकर्म में छत्तीसगढ़ी लोक साहित्य की आँच है तो दूसरी तरफ छायावादी भावबोध की पुकार भी है। पाण्डेय जी की गणना यशस्वी और शीर्षस्थ साहित्यकारों में होती है। उनकी रचना 'कुररी के प्रति' तथा 'छायावाद लेखमाला अमर और ऐतिहासिक रचनाएँ हैं। मुकुटधर पाण्डेय ही 'छायावाद' के प्रवर्तक हैं। उन्होंने हिंदी के विकास के लिए सार्थक प्रयास किया है, उनकी 'हिंदी गुणगान' कविता इस बात को प्रमाणित करने के लिए साक्षी है–

"हिंदी तन है, हिंदी मन है
हिंदी धन है हिंदी जन है
हिंदी भारत का सम्बल है
हिंदी पुण्य प्रेम का फल है
हिंदी संघ–शक्ति है अद्‌भुत
अविजित त्रिभुवन त्राण"
– हिंदी गुणगान

लोक–चेतना : अर्थ एवं परिभाषा –

लोक – संसार, भुवन, पृथ्वी, समाज मानव, जाति, प्रजा, समूह, भू–भाग, प्रांत
चेतना – बुद्धि विवेक से काम लेना, होश में आना, सोचना विचारना आदि

परिभाषा :–

1) डॉ वासुदेव शरण अग्रवाल के अनुसार – "लोक हमारे जीवन का महासमुद्र है जिसमें भूत, भविष्य और वर्तमान सभी कुछ संचित रहता है। 'लोक' ही राष्ट्र का अमर स्वरूप है।"[1]
2) तुलसी शब्द कोश में 'लोक' का अर्थ "दृश्यमान जगत एवं लोग" से लिया गया है।[2]
3) "लोक नगरों और ग्रामों में फैली हुई वह समूची जनता है जिनके व्यवहारिक ज्ञान का आधार केवल पोथियाँ ही नहीं है विलासिता और सुकुमारता को जीवित रखने के लिए जो वस्तुएँ आवश्यक होती हैं उनको उत्पन्न करते हैं।"

– आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी

'चेतना' शब्द का प्रयोग बुद्धि, ज्ञान, होश, समझना, विचारना, स्मृति, मनोवृत्ति, चेतनता, सुधि आदि वृहद् अर्थों में लिया गया है।

परिभाषा : डॉ अम्बलगे के अनुसार – "चेतना प्राणीमात्र में निहित वह शक्ति है जो उन्हें चैतन्यमय बनाकर सजीव सिद्ध करती है।"[3]

"जब व्यक्ति की चेतना में बाह्य भौतिक जगत की सक्रिय घटनाओं का प्रभाव पड़ता है तो मानव मस्तिष्क में अनेक मानसिक क्रियाओं की अनुभूति, हर्ष, लज्जा, शोक, त्रास, क्रोध, जुगुप्सा, घृणा, ग्लानि, कुण्ठा और आक्रोश आदि का उद्‌भव और विकास हो जाता है। चेतना का दूसरा तत्व वेदना है जिसमें उपर्युक्त सभी चेतना की विविधताएँ उपस्थित रहती है।"

Copyright @ 2020 Authors

ISSN: 2278-4632
Vol-10 Issue-8 No.9 August 2020

– डॉ. जे. एन. सिन्हा

उपर्युक्त तथ्यों के आधार पर हम कह सकते हैं कि 'लोक–चेतना' एक ऐसी दृष्टि है जो अपने युग का निरीक्षण कर वास्तविकता को सम्पूर्ण समाज के सामने प्रस्तुत करती है। 'लोक–चेतना' एक दर्पण के समान, परिवेश, घटनाओं का यथार्थ चित्र प्रस्तुत करती है।

शोध प्रविधि : प्रस्तुत शोध प्रवंध में प्राकृतिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक शोध का सहारा लिया गया है।

विवेचन :–

पाण्डेय जी के अनुसार सार्थक साहित्य वह है जिसमें लोक हित एवं समाज कल्याण की भावना निहित हो। जिस साहित्य में लोक–चेतना के माध्यम से लोकहित का उद्देश्य न हो वह साहित्य निरर्थक है, उद्देश्यहीन है। पाण्डेय जी के अनुसार कविता ऐसी हो जो जनता को जागृत कर उनके सुप्त भावों को जगा सके, उनके मन मस्तिष्क को झकझोर कर रख दें। पाण्डेय जी ने लोक–चेतना हेतु काव्य को गद्य की अपेक्षा अधिक प्रभावशाली साधन स्वीकार किया है। पाण्डेय जी ने वैयक्तिक, सामाजिक, राजनैतिक, राष्ट्रीय चेतना आदि विषयों को माध्यम बनाकर लोगों को जागरूक करने का भरपूर प्रयास किया है।

पाण्डेय जी के काव्य संग्रह 'पूजाफूल' में राष्ट्रभक्ति, प्रकृति, प्रेम और वैयक्तिक चेतना को देखा जा सकता है। पाण्डेय जी शांत स्वभाव के थे, लेकिन जहाँ अन्याय, अत्याचार देखते थे वहाँ सटीक वक्तव्य कहने से नहीं चूकते थे। चीन आक्रमण के समय वे बहुत उत्तेजित हुए। उन्होंने 'रणाह्वान' शीर्षक कविता लिखकर नवजवानों का आह्वान इन शब्दों में किया –

"हे अमृत के पुत्र
हे पुरूष शार्दुल हे रणवीर
छोड़कर तन्द्रा उठो तत्काल
एक पल न विलम्ब का है काल
खुल गया यह स्वर्ग का है द्वार
लो लपक कर हाथ में तलवार।"[4]

भक्तिपरक कविताएँ जिसमें राष्ट्रहित की कामना की गई है। 'सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामया' की भावना को चरितार्थ करते हुए सभी देशवासी चरित्रवान बनें, सब का जीवन सुखी हो जाए –

"दीजै हमें विमल भक्ति विभो ! तुम्हारी।
कीजै विनाश दुःख पाप कुवुद्धि सारी।।
होवै सुखी निज सभी गुरू बन्धु मित्र।
भ्राता तथा भगिनी आदि सच्चरित्र।।"[5]

गाँव में भिनसारे कुलवधूएँ समूह में कार्तिक स्नान करती हैं। यहाँ प्रकृति और मनुष्य का सुखद साहचर्य दर्शनीय है। यहाँ पाण्डेय जी ने लोक–चेतना का सुन्दर चित्र उकेरा है –

"कुल वधुएँ करती हैं स्नान
होता कैसा मंगल गान।"[6]

पाण्डेय जी ने मानव स्वभाव की सुन्दर व्याख्या की है। उनके अनुसार मानव गुणों की ओर ध्यान न देकर उनकी प्रथम दृष्टि अवगुणों की ओर जाती है। ऐसा करके वे अपने अहं भाव की पुष्टि करते हैं। 'गुलाब' कविता के माध्यम से कवि अवगुणों को त्यागकर सद्गुणों को ग्रहण करने की बात कही है –

"ऐ गुलाब। फूलों का राजा, है तू सर्वगुणों की धाम।
पर दुर्जन तेरे कांटे लख, तुझे समझते है बेकाम।।"[7]

बढ़ते हुए औद्योगीकरण और पूँजीवादी सभ्यता के परिणामस्वरूप कृषकों और श्रमिकों की दीन–हीन दशा का चित्रण निम्न पंक्ति के माध्यम से करते हैं –

"भारत का यह कृषक खेत में कठिन काम करता है
किन्तु वर्ष में कई महिने भूखा ही रहता है।"[8]

'ग्राम गुण–गान' कविता के माध्यम से कवि ने नगरों की अपेक्षा ग्रामों की महत्ता पर प्रकाश डालते हुए पाण्डेय जी लिखते हैं।

"नगरों में रहता था मैं, मुझको ग्राम न भाता था
छोड़ ग्राम नगरों में रहना, मुझे नहीं अब भाता है।"[9]

'मेरा प्रकृति प्रेम' कविता के माध्यम से कवि ने प्रकृति को मनुष्य जीव–जन्तु सभी के लिए महत्वपूर्ण बताया है। प्रकृति की अनुपस्थिति में मनुष्य और समस्त जीवों का कोई अस्तित्व ही नहीं है।

"इन्हें देखकर मन मेरा प्रसन्न होता है।
सांसारिक दुख ताप सभी छिन में खोता है।"[10]

Copyright @ 2020 Authors

ISSN: 2278-4632
Vol-10 Issue-8 No.9 August 2020

कवि की कल्पना अत्यंत सुन्दर है। वे कोयल के माध्यम से मानव को मधुर वचन बोलने का संदेश देते हैं। वे सुन्दरता की अपेक्षा गुणवत्ता को अधिक महत्व देते हैं –

"गुण उजागरी, मधुर भाषिणी, यह कोयल अति प्यारी है।
इसकी ताने न्यारी भारी, सुधि तक भी सुखकारी है।"[11]

'कुररी' कविता के माध्यम से मनुष्य की व्याकुलता को रम्य और अद्भूत कल्पना द्वारा अभिव्यक्ति देने में कवि अधिक सफल रहा है। 'कुररी के प्रति' छायावाद की प्रथम कविता है –

"बता मुझे ऐ विहग विदेशी अपने जी की बात।
पिछड़ा था तू कहाँ, आ रहा जो कर इतनी रात।"[12]

'कुररी' प्रवासी पक्षी के माध्यम से कवि ने "अतिथि देवो भव" की भावना को चरितार्थ किया है।

गायों की रक्षा हेतु, उनके सही तरीके से देखभाल, रख रखाव हेतु कवि लोगों से प्रार्थना करते हैं। गायों की दशा सुधारने हेतु आह्वान करते हैं –

"दे दुख गो को नर जो कदापि, है लोक में सो अति, नीच पापी।
विपत्ति से उन्हें शीघ्र उवारो, गो वंश की मित्र दशा सुधारो।।"[13]

कवि प्राकृतिक उपादानों से अपना सामंजस्य स्थापित कर लेता है। ऐसी दशा में आवश्यक है कि कवि को सरिता की कल–कल निनाद ने आत्मविभोर कर दिया है वह अपना परिचय दे। पाण्डेय जी महानदी की कल–कल निनाद से प्रश्न करते हैं –

"शीतल स्वच्छ नीर ले सुन्दर, वता कहाँ से आती है ?
इस जल्दी में महानदी तू, कहाँ घूमने जाती है ?"[14]

कवि कहते हैं विद्या के अभाव में मनुष्य, मनुष्य न होकर पशु तुल्य बन जाता है और प्रत्येक स्थान पर अपमान पाता है। इस पंक्ति के माध्यम से कवि ने विद्या के महत्व का प्रतिपादन किया है –

"विद्या बिन नर पशु समान पाते ठौर–ठौर अपमान।।
विद्या सम धन है नहिं आन, विद्या अर्जन करो सुजान।।"[15]

जननी और जन्मभूमि स्वर्ग से भी बढ़कर है इस भावना को साकार करते हुए इस पंक्ति के माध्यम से कवि जगत का कल्याण करना चाहते हैं –

"लेकर जन्म जहाँ सुख पाया, अन्न शाक है जिसका खाया।
उसे कभी मत जाना भूल, जन्मभूमि जो सुख का मूल।।"[16]

कवि के अनुसार हमारा जीवन तभी सफल हो सकता है जब हम सार्थक जीवन जीते हैं। जिस उद्देश्य हेतु हमारा जन्म हुआ है उस उद्देश्य की प्राप्ति हेतु हम प्रयास करते हैं–

"सदाचार सद्गुण से जिसने सब प्रकार नाता जोड़ा।
दुराचार दुर्गुण, दुरितों से जिसने अपना मुंह मोड़ा।"[17]

प्रस्तुत पंक्ति के माध्यम से कवि संसार की नश्वरता को प्रकट करते हुए कहते हैं कि समय बहुत कीमती है इसे व्यर्थ में बर्बाद न करें –

"उत्साह से था हो रहा सुख साज अति सुन्दर जहाँ।
देखो अभी ही मच गया है दुःख का क्रन्दन वहाँ।।"[18]

कवि कहते हैं मनुष्य को प्रकृति, पेड़–पौधे, गाय के समान परोपकार करते हुए जीवन जीने की प्रेरणा दे रहे हैं –

"परोपकारार्थ बनी, विचार जो सृष्टि सारी यह दृष्टि आती है।
संसार में परमार्थ सार, है अन्तरात्मा हम को सिखाती है।"[19]

पाण्डेय जी कहते हैं कि यह संसार क्षणिक है नश्वर है अतः इस संसार में जन्म लेकर अच्छे कर्म करना चाहिए।

"यह बाजार अचल है कहकर, हम सब करते नित्य गुमान।
क्रम–क्रम घटती आयु हमारी, इसका हमको जरा न ज्ञान।"[20]

पाण्डेय जी कहते हैं कि ईश्वर का निवास दबे, कुचले हुए लोगों के आँसू रूपी जल में दुखियों के पीड़ा, संताप में, संध्या के समय चलने वाली हवाओं में, प्रकृति के कण–कण में ईश्वर का निवास है। हमें इनका सम्मान करना चाहिए–

"दीन हीन के अश्रु नीर में,
पतितो के परिताप पीर में,
संध्या के चंचल समीर में,
करता था तू गान।"[21]

Copyright @ 2020 Authors

Juni Khyat
(UGC Care Group I Listed Journal)
ISSN: 2278-4632
Vol-10 Issue-8 No.9 August 2020

ग्राम्य जीवन का चित्रण करते हुए कवि ने पनघट और पनिहारिनियों का सुन्दर चित्रण किया है। इस पंक्ति में लोक–चेतना दृष्टव्य है –

"पनिहारिन पानी लेने को पंक्ति बाँधकर जाती है।
सिर पर नीर पूर्ण मिट्टी के कलसे ले ले आती है।।"[22]

पण्डित मुकुटधर पाण्डेय को गाँव में रहने वाले किसान, मजदूरों के प्रति सहानुभूति है। उन्होंने श्रम की महिमा का गुणगान 'किसान', 'खोमचावाला' आदि कविता के माध्यम से व्यक्त किया है–

"धन्य तुम ग्रामीण किसान
सरलता प्रिय औदार्य निधान
किया क्यों विजन ग्राम में गेह
नहीं प्रासादों की कुछ चाह
कुटीरों से क्यों इतना नेह!"[23]

पाण्डेय जी ने नये–नये तरीकों को अपनाकर पैदावार बढ़ाने और अपने देश के कृषकों को समृद्धशाली बनने की प्रेरणा निम्न पंक्ति के माध्यम से देते हैं –

"रोपा की तरकीब सीखकर अपनी उपज बढ़ावे हम।
चकबन्दी कर खेत कमावें, उनको सरस बनावे हम।
अपनी फटी लंगोटी तजकर धोती कोट सजावें हम।।"[24]

'खोमचावाला' काव्य के माध्यम से पाण्डेय जी ने चाट फुलकी बेचने वालों के प्रति गहरी सहानुभूति व्यक्त की है–

"असमय में है कहाँ घूमने
गया खोमचा वाला
अब तक ढोने तुझे न आया
लिए बाल्टी प्याला
दही बड़े आलू की टिकिया
फूलकी थाल सजाता
चने चटपटे चाट चकाचक
की आवाज लगाता।"[25]

पाण्डेय जी कहते हैं कि समय बड़ा बलवान होता है। वह राजा को रंक व रंक को राजा बना देता है –

"प्राणी जो कल था प्रसन्न मुख से आमोद में लीन हो।
देखो तो किस भाँति आज फिरता रोता वही दीन हो।।"[26]

छत्तीसगढ़ की मिट्टी से उन्हें अगाध प्रेम था। यहाँ की प्राकृतिक सौंदर्य नदी–पहाड़, पशु–पक्षी से लगाव था। 'महानदी' कविता की यह पंक्तियाँ दृष्टव्य है–

"कितना सुन्दर और मनोहर महानदी यह तेरा रूप
कलकल मय निर्मल जलधारा लहरों की है छटा अनूप
तुझे देखकर शैशव की स्मृतियाँ उर में उठती जाग
लेता है कैशोर काल का अँगड़ाई अल्हड़ अनुराग।"[27]

उपर्युक्त पंक्तियों के माध्यम से स्पष्ट है कि पाण्डेय जी का साहित्य लोक–चेतना से ओतप्रोत है। अपनी काव्य पंक्तियों के माध्यम से पाण्डेय जी ने जनजागृति लाने का हर संभव प्रयास किये हैं।

पण्डित मुकुटधर पाण्डेय के गद्य साहित्य में लोक–चेतना :

पाण्डेय जी उन व्यक्तियों में से नहीं हैं जिन्होंने केवल साहित्य का सृजन किया अपितु वे उन व्यक्तियों में से एक जिन्होंने अपना संपूर्ण जीवन जनता के लिए समर्पित कर दिया। पाण्डेय जी का यही संदेश था कि "साहित्य ऐसा हो जो जनता को जागृत कर सके समाज को ऊपर उठने की प्रेरणा दे।"[28]

1) **कवि और उसका चरित्र :** इस निबंध के माध्यम से कवि और उसके चरित्र को प्रकाशित किया है। कवि का स्थान बहुत ऊँचा होता है। कवि ईश्वरीय विभूति सम्पन्न होते हैं। उनकी रचनाएँ संसार को दृष्टि प्रदान करती है और संसार के लिए स्थायी सम्पत्ति समझी जाती है। उनकी रचनाओं में प्रतिभा की प्रभावशाली किरणें निकलती हैं जो मनुष्य को संकीर्ण विचारों से मुक्त कर व्यापक दृष्टिकोण प्रदान करती है।

कवियों में कुछ दुर्गुण भी पाये जाते हैं जैसे विलासिता, आमोद प्रियता आदि। पाण्डेय जी ने इस निबंध के माध्यम से नवयुवकों से अनुरोध करते हैं कि वे कवियों के गुणों को अपनायें और अपने जीवन को सफल बनावें। कवियों के दुर्गुणों से सदैव दूर रहें।

Copyright @ 2020 Authors

Juni Khyat
(UGC Care Group I Listed Journal)
ISSN: 2278-4632
Vol-10 Issue-8 No.9 August 2020

2) कविता : कविता शीर्षक निबंध में पाण्डेय जी ने नवयुवक कवियों के लिए एक आदर्श प्रस्तुत किया है। पाण्डेय जी का कथन है कि "कविता में सफलता प्राप्त करने के लिए किसी [illegible] पर [illegible] लेना चाहिए। कवि का काम सोती हुई जनता को जागृत करना, [illegible] लोगों को उचित मार्ग पर लाना उन्हें उनकी आवश्यकताएँ सुझा देना इत्यादि। [illegible] का विषय चुनना चाहिए।"[29]

ध्यान में रखकर कविता का [illegible] बड़े से बड़े नेता, नेताओं, समाज सुधारकों के साथ साथ भाषण से काम नहीं कर सकते वह काम एक छोटी सी कविता आसानी से कर सकती है।

3) "भविष्यत् में हिंदी का रूप क्या हो ?" : इस निबंध के माध्यम से पाण्डेय जी ने भाषा को [illegible] करने पर जोर दिया है। शब्द समूह को बढ़ाने के लिए उन्होंने उसके शब्द भण्डार का विस्तार करने [illegible] दो उपाय सुझाए हैं — पहला नए शब्दों को गढ़ना और दूसरा विदेशी शब्दों को ग्रहण करना। वे [illegible] भाषा के पक्षधर थे परंतु उसे संकीर्णता छोड़ उदार बनाने के भी पक्षधर थे।

4) पण्डित मुकुटधर पाण्डेय जी के अनुदित गद्य साहित्य में भी लोक–चेतना की झलक है। उन्होंने उड़िया भाषा के साहित्यकार फकीर मोहन सेनापति के उपन्यासों का हिंदी में अनुवाद किया और जनता को जागृत करने का प्रयास किया है। 'लछमा', 'समाज कंटक' या 'मामा' तथा 'शैलबाला' प्रमुख अनूदित उपन्यास है।

'लछमा' ऐतिहासिक उपन्यास है जिसमें बर्गियों द्वारा बंगाल और उड़ीसा पर किए गए अत्याचार की गाथा है। मराठों को बर्गी कहा जाता था। बर्गियों के आतंक को रोकने का साहस कोई नहीं करता था। ऐसे में वीरांगना लछमा जो पतिव्रता, साहसी धैर्य की प्रतिमा है अपने पति चन्द्रसिंह के साथ मिलकर युद्ध करती है और बर्गियों को परास्त करती है। प्रजावत्सला दिखाते हुए लछमा और चन्द्र सिंह सुखपूर्वक राज्य करते हैं।

'शैलबाला' उपन्यास में एक नारी की व्यथा कथा का वर्णन है। पतिव्रता, सुशील, आदर्श होने के बावजूद शैलबाला को उनके कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। अपने विनम्र स्वभाव प्रेम, दया, सहानुभूति करुणा आदि सद्गुणों के माध्यम से कठिनाइयों पर विजय प्राप्त करती है। इस उपन्यास के माध्यम से पाण्डेय जी ने नारी की असीम शक्ति का परिचय दिया है।

'मामा' उपन्यास भी एक सामाजिक समस्याओं पर आधारित उपन्यास है। जमींदार की मृत्यु के पश्चात् उसके बच्चों का अभिभावक उसका मामा बनता है। मामा उनकी संपत्ति को हड़पकर खुद जमींदार बनता है। बाद में उसे अपनी करनी का फल भुगतने के लिए जेल की सजा मिलती है उसे अपने कर्मों पर पश्चाताप होता है और वह वह ईश्वर को याद करता हुआ अपने पापों का प्रायश्चित करना चाहता है।

ऐसा ही एक कहानी 'प्रणयदान व प्रायश्चित' है जो सामाजिक अव्यवस्था, रूढ़ियों व परंपराओं पर आधारित है। किशोरी और उसके पति मन्मथ की कहानी है। दोनों का एक–दूसरे के प्रति अगाध प्रेम अचानक घृणा एवं क्रोध में बदल जाता है। उन्हें स्वयं पता नहीं चलता। इस दुखमय जीवन के लिए वे दोनों दोषी नहीं है, दोष तो निर्दयी समाज का और उनके माता–पिता के कहे बात का है जिसकी चक्की में पीसकर मन्मथ और किशोरी का जीवन पीस कर तबाह हो जाता है और वे आत्महत्या जैसे घृणित कार्य कर बैठते हैं। फिर भी सोए हुए समाज को जगाने में असमर्थ रहते हैं।

मुकुटधर पाण्डेय जी ने महाकवि कालिदास की कालजयी कृति 'मेघदूतम्' का छत्तीसगढ़ी में भावपूर्ण अनुवाद किया। जो छत्तीसगढ़ी भाषा के संवर्धन और विकास के लिए इस्पाती दस्तावेज है। बादल को संदेशवाहक बनाकर यक्ष अपनी प्रेयसी को संदेश भेजते हैं। मेघदूत की प्रारंभिक पंक्तियाँ है–

"यक्ष एक हर अपन काम मा
गलती कछु कर डारिस
तब कुबेर हर शाप छोड़ अलका ले
ओला निकारिस।"

– मेघदूत (छत्तीसगढ़)

निष्कर्ष : पण्डित मुकुटधर पाण्डेय अपने युग के सर्वाधिक क्रांतिकारी कवियों में से एक हैं। चित्रमयी भाषा के प्रयोग एवं जड़ता में चैतन्य का आभास प्रकट कराने वाले इस कवि की कलात्मकता अनूठी है। पाण्डेय जी की रचनाओं में निजी अनुभूति और प्रकृति के रचनात्मक सौंदर्य के प्रति जिज्ञासा के भाव है। वे उन्होंने साहित्य में लोक चेतना के माध्यम से मानव समुदाय एवं देश को एक नयी दृष्टिकोण प्रदान करने की सार्थक पहल की है।

संदर्भ सूची :–

1) समसामयिक संदर्भों के निकष पर पं. मुकुटधर पाण्डेय व डॉ. विमल कुमार पाठक के साहित्य का तुलनात्मक अनुशीलन डॉ. रंजना मिश्रा। पृ. क्र. 132–133।

Copyright @ 2020 Authors

2) समसामयिक संदर्भों के निकष पर पं. मुकुटधर पाण्डेय व डॉ. विमल कुमार पाठक के साहित्य का तुलनात्मक अनुशीलन डॉ. रंजना मिश्रा। पृ. क्र. 132–133 ।
3) समसामयिक संदर्भों के निकष पर पं. मुकुटधर पाण्डेय व डॉ. विमल कुमार पाठक के साहित्य का तुलनात्मक अनुशीलन डॉ. रंजना मिश्रा। पृ. क्र. 132–133 ।
4) छायावाद और मुकुटधर पाण्डेय पृ. क्र. 86 ।
5) पूजाफूल मुकुटधर पाण्डेय पृ. क्र. 61 ।
6) छायावाद और पं. मुकुटधर पाण्डेय पृ. क्र. 34 ।
7) पूजाफूल मुकुटधर पाण्डेय पृ. क्र. 25 ।
8) छायावाद और मुकुटधर पाण्डेय संपादक डॉ. बलदेव पृ. क्र. 32 ।
9) छायावाद और मुकुटधर पाण्डेय संपादक डॉ. बलदेव पृ. क्र. 36 ।
10) पण्डित मुकुटधर पाण्डेय चयनिका प्रो. दिनेश पाण्डेय डॉ. बिहारीलाल साहू पृ. क्र. 21 ।
11) पूजाफूल पृ. क्र. 28 ।
12) छायावाद और मुकुटधर पाण्डेय संपादक डॉ बलदेव पृ. क्र. 74 ।
13) पूजाफूल मुकुटधर पाण्डेय पृ. क्र. 68 ।
14) पूजाफूल मुकुटधर पाण्डेय पृ. क्र. 30 ।
15) पूजाफूल मुकुटधर पाण्डेय पृ. क्र. 29 ।
16) पूजाफूल मुकुटधर पाण्डेय पृ. क्र. 43 ।
17) पूजाफूल मुकुटधर पाण्डेय पृ. क्र. 97–99, जीवन साफल्य पं. मुकुटधर पाण्डेय चयनिका डॉ. बिहारीलाल साहू पृ. क्र. 26 ।
18) पूजाफूल मुकुटधर पाण्डेय पृ. क्र. 51 ।
19) पूजाफूल मुकुटधर पाण्डेय पृ. क्र. 47 ।
20) पूजाफूल मुकुटधर पाण्डेय पृ. क्र. 57 ।
21) विश्वबोध मुकुटधर पाण्डेय पृ. क्र. 75 ।
22) पं. मुकुटधर पाण्डेय व्यक्तित्व एवं कृतित्व संपादक नंदकिशोर तिवारी पृ. 102 ।
23) किसान, पं. मुकुटधर पाण्डेय चयनिका, छत्तीसगढ़ राज्य हिंदी ग्रंथ अकादमी सं. प्रो. दिनेश पाण्डेय, बिहारीलाल साहू पृ. क्र. 66 ।
24) पूजाफूल पं. मुकुटधर पाण्डेय पृ. क्र. 152 ।
25) खोमचावाला, पं. मुकुटधर पाण्डेय, व्यक्ति एवं रचना, सं. महावीर अग्रवाल, पृ. क्र. 423 ।
26) पूजाफूल पं. मुकुटधर पाण्डेय पृ. क्र. 67 ।
27) महानदी–1, पं. मुकुटधर पाण्डेय चयनिका, छत्तीसगढ़ राज्य हिंदी ग्रंथ अकादमी, रायपुर सं. प्रो. दिनेश पाण्डेय, बिहारीलाल साहू पृ. क्र. 66 ।
28) छायावाद और मुकुटधर पाण्डेय संपादक डॉ. बलदेव पृ. 71 ।
29) पं. मुकुटधर पाण्डेय चयनिका संपादक प्रो. दिनेश पाण्डेय और डॉ. बिहारीलाल साहू पृ.क्र. 110 ।

Copyright @ 2020 Authors